बच्चों की आवाज़

शीर्षक **बच्चों की आवाज़**
(मध्यप्रदेश में बच्चों के अधिकारों की स्थितियों का एक सर्वेक्षण)

प्रकाशक विकास संवाद

पता ई 7/226, प्रथम तल, धनवंतरी काम्प्लेक्स के सामने
अरेरा कालोनी, शाहपुरा, भोपाल, मध्यप्रदेश
vikassamvad@gmail.com
www.mediaforrights.org / www.vssmp.org
(0755 - 4252789)

वर्ष 2017

प्रतियां 1000

सर्वाधिकार उन सबके लिए सुरक्षित, जो बदलाव के लिए इसका उपयोग करना चाहते हैं;

मुद्रक बी.के. प्रिंटर्स
महाराणा प्रताप नगर, ज़ोन - 1, भोपाल. मो. : 9926553438

सहयोग यूनिसेफ

प्रस्तावना

क्या बड़ों की दुनिया में बच्चों की आवाज है? आवाज है तो क्या वह इतनी ताकतवर है कि बड़ों की दुनिया में कोई हस्तक्षेप कर पाती है? बड़ों की दुनिया में बच्चे मात्र कठपुतली हैं जिनकी पीठ पर एक तय समय पर भारी—भरकम बस्ता टांग दिया जाता है, एक तय समय पर उनको खाना है, एक तय समय पर खेलना है, हर गतिविधि का एक वक्त मुकर्रर है, और इस प्रक्रिया में कहीं उनकी राय नहीं है। बड़ों की दुनिया उनसे बातचीत नहीं करती, संवाद नहीं करती, वह निर्देश देती है। सुबह से शाम तक यदि गिना जाए तो बच्चे बड़ों की जुबान से जाने कितने हुक्म या निर्देश ही सुनते हैं। इसलिए उनकी दुनिया एक गुलाम दुनिया है, जो बड़ों ने जाने—अनजाने गढ़ी है। पर क्या उनकी अभिव्यक्ति है? एक बेहतर दुनिया बनाने में उनकी क्या सोच है? उनकी अपनी दुनिया के बारे में उनके क्या ख्याल हैं? वह अपना अच्छा—बुरा, सही—गलत कैसे सोचते हैं, करते हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण है। जैसा उनके साथ होता है, किया जाता है, वही व्यवहार वह अपने बड़ेपन में ले जाते हैं, और यह चक्र टूट ही नहीं पाता। बेहद बारीकी से देखे जाने की जरूरत है। समझे जाने की जरूरत है।

बचपन की दुनिया को समझ पाना इतना आसान नहीं है। बचपन को जानने के लिए अपने मन को संवेदनशील बनाना पड़ता है, और कई बार तो खुद भी बच्चा बन जाना पड़ता है, दु:खद तो यह है कि बड़ों का समाज अपने अहंकार में खोया है और वह बचपन को जानना—समझना ही नहीं चाहता है। तो कैसी है बचपन की दुनिया, क्या है बच्चों की आवाज। अपने घर—परिवार, आस—पड़ोस, स्कूल—आंगनवाड़ी, ड्राइंगरूम से लेकर, किचन और खेल के मैदान तक, मम्मी—पापा, बहन भाई से लेकर स्कूल के शिक्षक, वैन के ड्राइवर—कंडेक्टर, रास्ते में खड़े लड़कों और जानवरों तक के साथ बच्चे कैसा महसूस करते हैं? उनके रोजाना के जीवन की वह चंद बातें जो उनके व्यक्तित्व को बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं और कहीं न कहीं प्रभावित भी करती हैं, उसके क्या सरोकार हैं, वह ठीक हैं या नहीं हैं, कहां सही और गलत हैं, इन्हीं बिंदुओं को जानने समझने की एक छोटी सी कोशिश है यह सर्वेक्षण 'बच्चों की आवाज'।

मध्यप्रदेश में बच्चों के साथ किया जाने वाला अपनी तरह का यह पहला सर्वेक्षण है जो केवल फार्मेट भर कर पूरा नहीं किया गया। बच्चों की आवाज सुनने के लिए इसकी पूरी प्रक्रिया को इस तरह से निर्धारित किया गया जिसमें बच्चे बहुत सहजता के साथ अपनी बात कह सकें। उन्हें मजा आए। उन्हें अपनापन लगे। इसके लिए हमने उनके अंदर से क्लासरूम का डर दूर किया। उनसे कोरी किताबों की बात नहीं की। उन्हें खेल खिलवाए, गाने गवाए, चित्र बनवाए, कागज की टोपियां बनवाईं। वह सब किया जिसमें बच्चे खेल—खेल में सीख जाते हैं, दोस्त बन जाते हैं। इस प्रक्रिया में हमें बच्चों की ओर से मिली लिखित प्रतिक्रियाएं यह इशारा करती भी हैं, कि इसमें उन्हें मजा आया। उन्होंने बार—बार लिखा कि आप फिर आईये। दोबारा आईये।

बच्चों की आवाज अब आप सभी के सुपुर्द है। यह आज की स्थिति है जो बताती है कि हमने थोड़ा किया, लेकिन बहुत किए जाने की जरूरत है। बचपन अब भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं है। हमारे समाज के बचपन को अभी बहुत सुधार की जरूरत है। यह भी सत्य है कि इसके लिए इसके लिए सरकार और समुदाय को ही निर्णय लेने होंगे, नीतियां बनानी होंगी, हर पक्ष को बारीकी से समझना होगा, केवल सरकारी संस्थाएं ही नहीं, परिवार, मोहल्ला, गांव, शहर, देश—प्रदेश हर स्तर पर हमें नीतियों और व्यवहार में बच्चों को प्राथमिकता से लाना होगा।

बचपन की तस्वीर आपके हाथ में है।

- विकास संवाद और साथी

बच्चों के अधिकार का मतलब

बच्चे वे व्यक्ति हैं, जिनकी उम्र अठारह वर्ष से कम है।

हमारी कोशिश है कि समाज और व्यवस्था में बच्चों के अधिकारों की रक्षा हो और उन्हें एक सम्पूर्ण मानवीय इकाई माना जाए। पिछले 3 दशकों में बच्चों के अधिकारों, उनके स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा पर बहुत बहस भी हुई और कोशिशें भी की गयीं। सामान्य अनुभव यह बताता है कि 'राज्य' यानी कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका ने कुछ अहम् कदम उठाए, क़ानून और नीतियां बनायीं; किन्तु उनका जमीनी क्रियान्वयन गंभीरता से नहीं हुआ।

असल बात यह भी है कि बच्चों के अधिकारों के हनन के मामले में कुछ बुनियादी कारण होते हैं, उन्हें हम हल नहीं कर पाते हैं, जिससे बच्चों के अधिकारों का संरक्षण नहीं हो पाता। मसलन बच्चे मजदूरी करते हैं और क़ानून के जरिये बाल मजदूरी रोकने की पहल हुई, किन्तु यह समझना जरूरी है कि आर्थिक गरीबी और संसाधनों के अभाव में कई बच्चे मजदूरी करने के लिए मजबूर होते हैं। यानी आर्थिक गरीबी हटाए बिना और संसाधनों का हक दिए बिना बाल मजदूरी को खत्म किया जा सकता है क्या?

यदि समाज वास्तव में बच्चों के लिए प्रतिबद्ध हो जाए तो बच्चों के अधिकारों को सुनिश्चित कर सकते हैं। जरूरी है कि जिन भावनाओं से बाल अधिकारों पर क़ानून बने हैं, उन्हीं भावनाओं के अनुरूप उनका क्रियान्वयन हो। हमें व्यवस्था की जवाबदेहिता भी सुनिश्चित करना है और समाज में ऐसे व्यवहारों के विरुद्ध भी आवाज़ उठाना है, जो बच्चों के हितों में नहीं हैं।

बच्चों का अधिकार एक नजरिया

बच्चों के अधिकारों को व्यापक सन्दर्भ में चार रूपों में देखा-समझा जाता है -

1. ***उत्तरजीविता का अधिकार*** यानी जीवन जीने का अधिकार, अच्छा खाना, पानी, इलाज, अच्छी सेहत रखने वाला वातावरण।
2. ***संरक्षण का अधिकार*** यानी अच्छे व्यवहार को हासिल करने, हिंसा, बचपन में मजदूरी और बाल विवाह से मुक्ति, शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक शोषण से मुक्ति, किसी तरह का भेदभाव न होना।
3. ***सहभागिता का अधिकार*** यानी जिन मामलों से भी बच्चों के हित जुड़े हों या व्यापक समाज के हित जुड़े हों, उन पर निर्णय लेते समय बच्चों की बात भी सुनी जाए, उन्हें अपने विचार और भावनाएं व्यक्त करने का समान अवसर मिले; ऐसा नहीं हो कि बच्चों को उनकी बात कहने दी जाए, पर समाज-सरकार उसे सुने ही नहीं; अत: बच्चों की आवाज़ सुनी, समझी और लागू की जाना चाहिए।
4. ***विकास का अधिकार*** यानी गुणवत्तापूर्ण और समानता आधारित शिक्षा का अधिकार मिले, खेलने और मनोरंजन का अधिकार मिलना, अपना समूह बनाने और मित्रता निभाने, रिश्ते मजबूत करने का अधिकार।

बच्चों के लिए बुनियादी सेवाएं और ढांचा

स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा के लिए जरूरी ढांचा खड़ा होना बाल केंद्रित व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण पैमाना है। ऐसा नहीं हो कि स्कूल की केवल इमारत ही बने, उसमें प्रशिक्षित शिक्षक, पुस्तकालय, खेल का मैदान, पीने का पानी, साफ़ शौचालय सरीखी व्यवस्थाएं होना चाहिए। इसी तरह स्वास्थ्य सेवाओं का विषय है। अस्पताल, चिकित्सक, दवाएं, बच्चों के अनुकूल सहज वातावरण होना भी जरूरी है। इसी तरह बच्चों के संरक्षण के लिए बनी व्यवस्थाओं का बेहतर होना भी जरूरी है।

बाल केंद्रित नियोजन का आशय

बच्चों के हितों और जीवन को संरक्षण देने वाला समाज बनाना। विकास और सामाजिक बदलाव की हर नीति और हर व्यवहार का असर बच्चों पर पड़ता है। यदि जंगलों का विनाश हो रहा है, तो इससे पैदा होने वाले पर्यावरण संकट का बच्चों के वर्तमान पर ही नहीं, उनके भविष्य पर भी गहरा असर पड़ता है। जब हम बड़ी विकास परियोजनाओं का निर्माण करते हैं, तब अक्सर उनमें बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित नहीं करते हैं। हमारे यहां ग्राम सभा की व्यवस्था है; लेकिन दूसरे अर्थ में देखें तो पता चलता है कि बच्चों (यानी 18 साल तक की जनसंख्या को दूर रखकर) ही सभी निर्णय लिए जाने की व्यवस्था बनाई गई है। क्या बच्चों को अपनी बात कहने का अवसर नहीं मिलना चाहिए?

इसी तरह शिक्षा का मौजूदा स्वरूप बच्चों पर कितना दबाव डाल रहा है, कई बच्चे आत्महत्या कर रहे हैं; ऐसे में हमें शिक्षा व्यवस्था के पुनःनिर्माण की प्रक्रिया में उन्हें शामिल करना चाहिए। हम यदि बच्चों को सवाल पूछने, अपनी बात कहने से रोकेंगे, तो यह बच्चों के साथ न्याय नहीं होगा। जब उन्हें अपनी बात कहने से रोका जाता है, तब वे चुपचाप शारीरिक-मानसिक शोषण सहने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इस स्थिति को बदलने के लिए हमें समाज और सरकार की प्रक्रियाओं और निर्णय लेने की व्यवस्था में उनकी बात सुनने और शामिल करने की जरूरी पहल करना होगी।

बच्चों की सुरक्षा की जरूरत कब ?

बाल विवाह, बाल मजदूरी, बच्चों को बंधुआ रखना, बच्चों से भीख मंगवाना, उन्हें प्रताड़ित करना, उनका लैंगिक उत्पीड़न, बच्चों का अकेले या अनाथ होना, उनका बेघर होना या घर से भाग जाना, बच्चों को शारीरिक मानसिक दंड देना, बच्चों को खरीदना या बेचना, जिसे मारने या क्षति पहुंचाने की धमकी दी गयी हो, जो मानसिक रूप से बीमार या मानसिक-शारीरिक रूप से असुविधाग्रस्त हो, बच्चों से नशीले सामान का परिवहन करवाना, बच्चों को नशा करने के लिए प्रेरित या मजबूर करना आदि।

कानून तोड़ने वाले बच्चे से अभिप्राय

जब कोई भी व्यक्ति, जिसकी उम्र 18 साल से कम है, चोरी, मारपीट, तस्करी, लैंगिक उत्पीड़न, बलात्कार, हत्या या अन्य कोई ऐसे कामों में संलग्न पाया जाता है, जो हमारे कानून के हिसाब से अपराध की श्रेणी में आते हैं, उन बच्चों को कानून तोड़ने वाले बच्चे (विधि विवादित) माना जाता है। इस तरह के बच्चों के मामलों की सुनवाई बच्चों की अदालत (किशोर न्यायालय) या किशोर न्यायिक बोर्ड करता है।

सिद्धांत यह कहता है कि ऐसे बच्चों को शुरू से ही आपराधिक प्रकृति का या असद्भावना का दोषी नहीं माना जाएगा। बच्चों के संरक्षण और देखभाल की पहली जिम्मेदारी समाज की है। जब बच्चे वहां असुरक्षित हो जाते हैं, तब कानून की जरूरत पड़ती है। किसी भी गांव, बस्ती या शहर की परिस्थितियों में बच्चों की स्थिति सबसे ज्यादा संवेदनशील होती है, किसी भी उतार-चढ़ाव से सबसे ज्यादा प्रभावित और असुरक्षित बच्चे होते हैं।

अक्सर हमें असुरक्षित स्थितियों में बच्चे दिखाई देते हैं, लेकिन हम इनकी क्या और कैसे मदद कर सकते हैं, हमें इसकी जानकारी नहीं होती है। बच्चे हमें होटल में, मैकेनिक की दुकान, समारोहों में, शादियों में रोशनी का बोझ उठाये और रेल्वे स्टेशन सरीखी कई जगहों पर काम करते हुए दिखाई देते हैं। शायद इन बच्चों और इनके परिवारों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति उन्हें बाल श्रम करने या शोषण के जाल में फंसने के लिए मजबूर करती है।

इसी तरह हमारे गांवों, शहरों, बस्तियों में महाकुम्भ, इज्तिमा, शिवरात्रि मेले, स्थानीय सांस्कृतिक मेले, व्यावसायिक मेले सरीखे कई छोटे-बड़े आयोजन होते हैं। इन छोटे-बड़े आयोजनों में स्थानीय एवं अन्य बाहरी क्षेत्रों के लोग भागीदारी करते हैं। इनमें बुजुर्ग, बच्चे और महिलाएं पूरी श्रद्धा और उल्लास के साथ शामिल होते हैं।

बच्चों के हकों से जुड़े व्यापक पहलू

मौजूदा समय में सामान्य तौर पर और इन आयोजनों में भी कतिपय तत्वों के सक्रिय होने से बच्चों के भीख मांगने, बाल तस्करी, बाल शोषण, बाल मजदूरी, उत्पीड़न आदि समस्याओं के बढ़ने की भी आशंका होती है। ऐसे में समाज के सजग समूह के रूप में इन विपरीत परिस्थितियों में बच्चों के संरक्षण के लिए हम क्या कर सकते हैं; ताकि हमारे गांव, शहर, बस्ती और समाज 'बाल अनुकूल' बने। प्राकृतिक आपदाएं, मानव निर्मित आपदाएं और विकास की बड़ी परियोजनाओं का सबसे गहरा असर बच्चों के ऊपर पड़ता है। इन से उन्हें केवल शारीरिक हानि नहीं होती है, बल्कि उनके मानस पर भी गहरा असर पड़ता है। एक तरफ तो उनके स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण के अधिकार सीमित होते हैं, तो दूसरी तरफ बच्चों के शारीरिक शोषण और बाल-तस्करी भी बढ़ जाती है। ऐसे में बहुत जरूरी हो जाता है कि आपदाओं से जूझने और निपटने के लिए बनने वाली नीतियों को बच्चों के नज़रिए से देखा और लागू किया जाए।

सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में बच्चों की स्थिति हमेशा संवेदनशील बन रही है। बच्चों के रूप की अश्लील प्रस्तुति, शोषण की वहां भी आशंकाएं बनी हुई हैं।

इसी तरह कम उम्र में विवाह, यौनिक शोषण, गरीबी के कारण विकास और सम्मानजनक जीवन के अवसरों से वंचित रह जाना भी बच्चों के अधिकारों के हनन से जुड़े विषय हैं। हमें बच्चों के संरक्षण के अधिकार को व्यापक रूप से देखना होगा। मध्यप्रदेश की कुल जनसंख्या में लगभग 42 प्रतिशत की उम्र 18 वर्ष से कम है। यानी उनके जन्म के समय की देखभाल से लेकर, उनके पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा और सम्मानजनक विकास की पूरी प्रक्रिया की जिम्मेदारी समाज को निभाना होती है।

वर्तमान स्थिति यह है कि मध्यप्रदेश में पांच साल से कम उम्र के लगभग 43 प्रतिशत बच्चे कम वजन के हैं, एक तिहाई बच्चों को पूरे टीके नहीं लगते हैं, जब 1000 जीवित बच्चे जन्म लेते हैं, उतने समय में 51 बच्चे (जो अपना पहला जन्मदिन नहीं मना पाते) दम तोड़ देते हैं। खोजते हैं तो ऐसे तमाम आंकड़े हमें मिलते ही चले जाते हैं। यह आंकड़े हमें डराते हैं। आंकड़े हमें सुधार का संकेत देते हैं। जरा देखिये कि क्या अपने आसपास के सभी बच्चे स्वस्थ और खुश हैं?

चित्र : वर्षा परिहार

सर्वेक्षण की प्रविधि

इस सर्वे के लिए सबसे बड़ी चुनौती थी कि बच्चों की राय को किस तरह से निष्पक्ष रूप से निकाल पाएं। यह चुनौती इसलिए थी, क्योंकि वयस्कों के द्वारा बच्चों को इस कदर दबाया जाता है कि वो बेबाकी से अपनी राय रखने में हिचकते हैं और ज्यादातर चुप्पी साध लेते हैं। अक्सर वयस्कों को आपस में यह कहते हुए आपने भी सुना होगा कि 'क्या बच्चों जैसी बातें करते हो'। मतलब बच्चों की बातें और उनकी राय का महत्व वयस्कों के लिए कुछ भी नहीं है। इसलिए चाहे स्कूल हो या घर बच्चों की राय और बातों को कोई महत्व नहीं दिया जाता जबकि वहां होने वाले फैसले और कार्य बच्चों को बहुत प्रभावित करते हैं। इस चुनौती को ध्यान में रखते हुए हमने इस सर्वे को निर्धारित किया।

इस सर्वे के लिए तीन तरह की प्रश्नावली बनायीं गयीं, जिसमें कुल प्रश्न 69 रखे गए। इसके अलावा चित्र अभिव्यक्ति और चर्चा को भी शामिल किया गया। प्रश्नावली बनाते समय यह ध्यान रखा गया कि बच्चे ज्यादा से ज्यादा मुद्दों पर अपनी बेबाक राय दे सकें। इसलिए उनसे जुड़े हुए लगभग सभी मुद्दों को प्रश्नों में शामिल किया गया। जैसे - स्वास्थ्य, सफाई, मूलभूत जरूरतें, जेंडर, यौन हिंसा, परिवार-स्कूल में उनका स्थान, बाल मजदूरी, शिक्षा, पर्यावरण इत्यादि। बच्चे हर मुद्दों पर सोचते हैं और उनके बारे में उनकी राय भी बनती है पर अपनी बातों को लिख पाने में बहुत से बच्चे झिझकते हैं इसलिए विस्तृत प्रश्नों की संख्या कम रखी गयी और प्रश्न भी छोटे रखे गए। ज्यादातर प्रश्न वैकल्पिक रखे गए जिन्हें पढ़कर केवल निशान लगाकर उन्हें अपनी राय को बताने का मौका दिया गया।

1. वैकल्पिक प्रश्नावली (28 प्रश्न)
2. क्या सही क्या गलत? (29 प्रश्न)
3. विस्तृत प्रश्नावली (12 प्रश्न)
4. चित्र अभिव्यक्ति
5. चर्चा (केस स्टडी)

यह सर्वे 10 जिलों के 5-5 गांवों में 2500 बच्चों के साथ करना तय किया गया। इसके लिए उन जिलों में साथी संस्थाओं की मदद ली गयी। बच्चे खुलकर बेहिचक अपनी राय दे पाएं इसके लिए इस सर्वे को स्कूलों और घरों से बाहर रखा गया। हम ये मानते हैं कि बच्चों को यदि उचित माहौल दिया जाए और उनसे दोस्ती व बराबरी का व्यवहार किया जाए तो वो बहुत खुलकर बात करते हैं इसलिए हमने इस सर्वे से पहले उनके साथ तरह-तरह की मनोरंजक गतिविधियां करवाईं और जब उनसे दोस्ती हो गयी और उनका विश्वास हम पर बना तब उनसे सर्वे प्रपत्र भरवाए और चर्चा की।

इस सर्वे को करने के लिए सभी पार्टनर संस्थाओं से 2-2 कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण के लिए भोपाल कार्यशाला में बुलाया गया और एक प्रशिक्षण मॉड्यूल भी बनाया गया। प्रपत्र पर चर्चा, बच्चों के साथ किस तरह से व्यवहार करना चाहिए, क्या गतिविधि करना है और कैसे करना है, इत्यादि प्रशिक्षण सभी कार्यकर्ताओं को दिया गया। साथ ही कार्यकर्ताओं को एक किट दिया गया जिसमें प्रशिक्षण मॉड्यूल के अलावा, शारीरिक हिंसा पर कमला भसीन की किताब **'काश मुझे किसी ने बताया होता'**, चकमक पत्रिका से लेख, बच्चों के साथ गतिविधियां करवाने के लिए सामग्री थी। कार्यकर्ताओं ने सर्वे के लिए प्लान बनाया कि कब- कब और कहां यह सर्वे किया जाएगा। इसके पश्चात् सभी 10 जिलों में बच्चों के साथ 1-1 दिन का गतिविधि शिविर किया गया और सर्वे प्रपत्र भरवाए गए। इस सर्वे में कुल 2292 बच्चों की भागीदारी रही। इसमें स्कूल से बाहर के बच्चों को भी शामिल किया गया है।

शामिल बच्चे

- **6 से 9 वर्ष के - 257 बच्चे**
- **10 से 14 वर्ष - 1483 बच्चे**
- **15 से 18 वर्ष - 552 बच्चे**

सर्वे में शामिल जिले

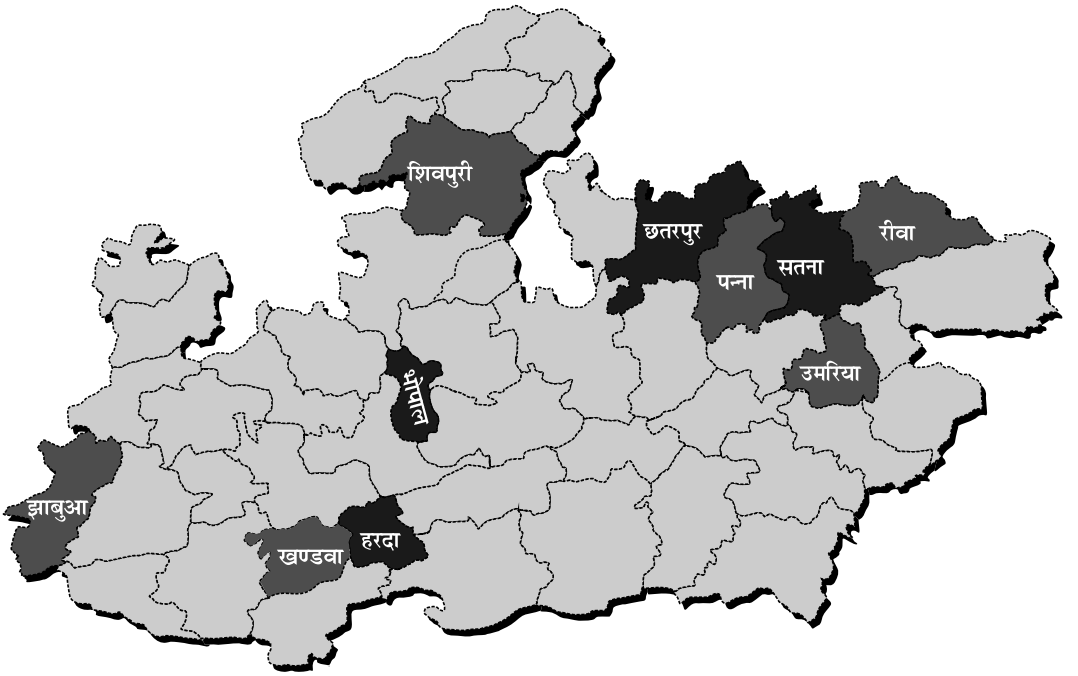

नोट : यह नक्शा प्रतीकात्मक है, समझने की दृष्टि से इसका उपयोग किया गया है। साभार – गूगल सर्च।

डाटा एंट्री

सभी 10 जिलों से आये हुए सर्वे प्रपत्रों की एक्सल शीट में एंट्री करने के लिए फार्मेट बनाया गया ताकि सभी जानकारियों को पूरी पारदर्शिता और सटीक तरीके से लिया जा सके। सभी प्रपत्रों का एंट्री के बाद विश्लेषण किया गया।

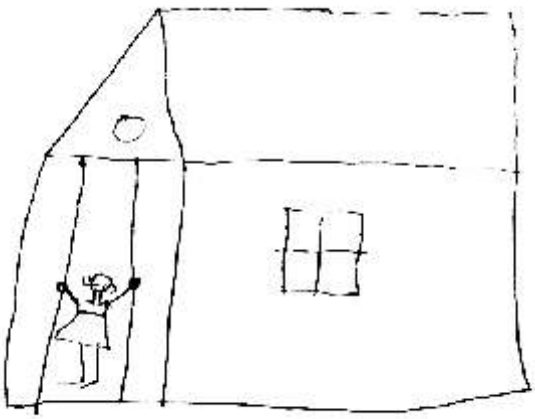

चित्र : सपना जाटव

सर्वे के विश्लेषण में चौकाने वाले परिणाम सामने आए हैं। बच्चों ने बहुत ही बारीकी और बेबाकी से अपनी राय सामने रखी है। इस भाग में हम अलग-अलग मुद्दों पर उनकी राय को देखते हैं।

1

मूलभूत सुविधाएं

> हमारे स्कूल में पीने के पानी की व्यवस्था नहीं है इसके कारण कुएं–हैंडपम्प पे पीने जाते हैं और पानी न होने के कारण कई बच्चे यहां पर खाना भी नहीं खाते। अगर खाना खाएं तो हाथ कहां धोएं ? पानी न होने के कारण बड़े लड़के रोज कुएं पर पानी लेने जाते हैं, जिसके कारण उनका भी टाइम खराब होता है। हमारे स्कूल में पानी की व्यवस्था होना बहुत जरूरी है।
>
> **शिवानी**
> उम्र 15 साल, जिला खंडवा

- **20% बच्चों ने बताया कि उनके स्कूल में शौचालय नहीं है।**
- **14% बच्चों का कहना है कि शौचालय है, पर गन्दा है और बंद रहता है।**
- **11% बच्चों ने कहा कि स्कूल में लड़के-लड़कियों का एक ही शौचालय है, अलग- अलग नहीं है।**

> हमारे देश में बहुत गरीब लोग रहते हैं। गरीब लोगों की बात कोई नहीं समझता। स्कूल जाते समय हमें बहुत डर लगता है।
> – **शांति,** उम्र 14 साल, जिला छतरपुर

साफ शौचालय और साफ पानी हर किसी के लिए चाहे वो बड़े हों या बच्चे मूलभूत सुविधाएं हैं किन्तु अक्सर ही हम यह पाते हैं कि बच्चों को इन मूलभूत सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है, क्योंकि वो बच्चे हैं। एक सेमिनार में नेशनल सेंटर फॉर एजुकेशन एंड रिसर्च ट्रेनिंग (NCERT) के पूर्व निदेशक व शिक्षाविद प्रोफेसर कृष्ण कुमार ने कहा था कि 'हम वयस्क सोचते हैं कि बच्चे तो बाहर कहीं भी शौच कर सकते हैं। बच्चों को क्या फर्क पड़ता है, लेकिन ऐसा नहीं है। साफ शौचालय हर बच्चे की मूलभूत जरूरत है और हक़ भी है। इसलिए हर स्कूल और घर में साफ शौचालय होना ही चाहिए।'

सर्वे के दौरान जब बच्चों से शौचालय के बारे में चर्चा की गयी तो बच्चों का कहना था कि उन्हें बाहर खुले में शौच जाने में शर्म आती है और डर भी लगता है। खासकर लड़कियों ने बताया कि इस कारण से वो स्कूल में शौच आने पर भी बाहर शौच के लिए नहीं जाती और उनके पेट में दर्द होता रहता है।

इन हालातों में जहां बच्चों को उनकी जरूरतों की मूलभूत सुविधाएं ही उपलब्ध नहीं हैं, उनके अच्छे स्वास्थ्य और शिक्षा की हालत का अंदाजा लगाया जा सकता है कि वो कितनी दयनीय स्थिति में होंगे। जबकि बच्चों को इनकी खासी जरूरत महसूस होती है।

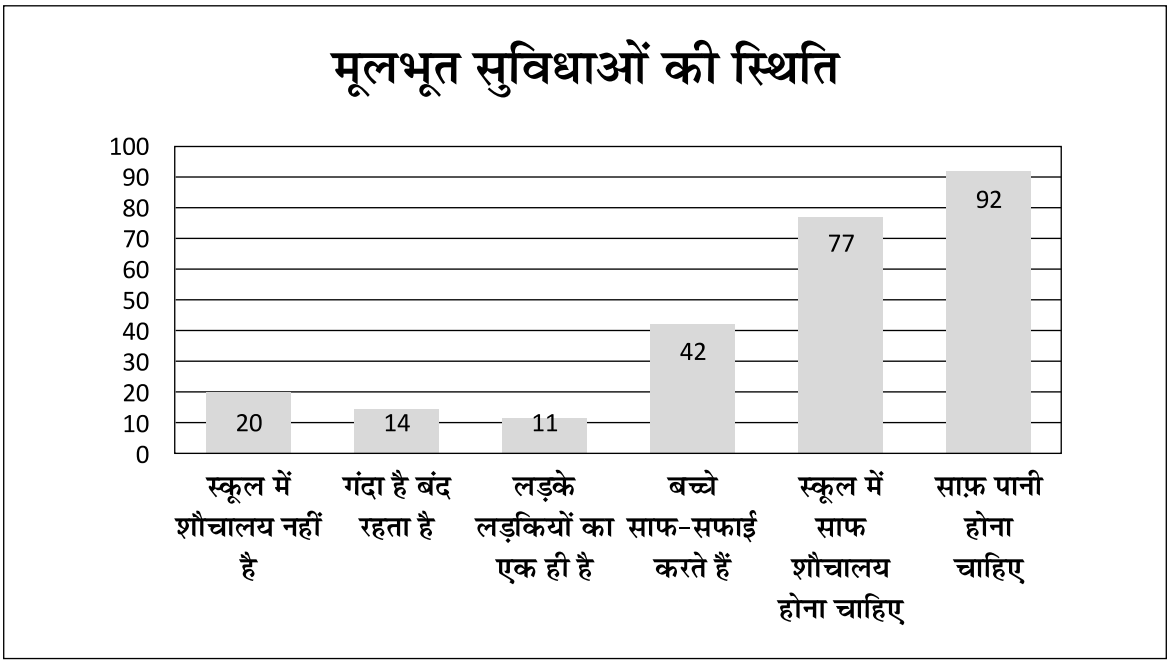

"

हमें स्कूल जाने में कठिन सा लगता है और हमें हर जगह जाने में कठिन सा लगता है,
लेकिन हम चलने के लिए तैयार रहते हैं।
– **सीता,** उम्र 16 साल, जिला छतरपुर

"

2

मध्यान्ह भोजन व भेदभाव

हमारे विद्यालय में अच्छा भोजन नहीं मिलता है। थाली की कमी है, पानी नहीं मिलता है।

दिवाकर
उम्र 15 साल, जिला उमरिया

- **63% बच्चों ने बताया कि मिड-डे मील अच्छा मिलता है।**
- **7% बच्चों ने मिड-डे मील की गुणवत्ता को ख़राब बताया।**
- **11% बच्चों ने ठीक-ठाक बताया है।**

जब हम घर से बाहर निकलते हैं तो हम पर बुरा प्रभाव पड़ता है, हम कहीं भी सफर करते हैं तो बस में लोग धक्के मारते हैं और लोग हमको बुरी नजर से देखते हैं, तरह—तरह की बातें करते हैं।

– **नेहा,** उम्र 16 साल, जिला छतरपुर

भारत में बच्चों के पोषण के हालात को देखते हुए स्कूलों में मध्यान्ह भोजन (मिड डे मील) देने की योजना बहुत ही अच्छी है। इसे बच्चे भी पसंद करते हैं, और चाहते हैं कि इसकी गुणवत्ता और बेहतर हो।

बच्चों की आवाज बताती है कि...

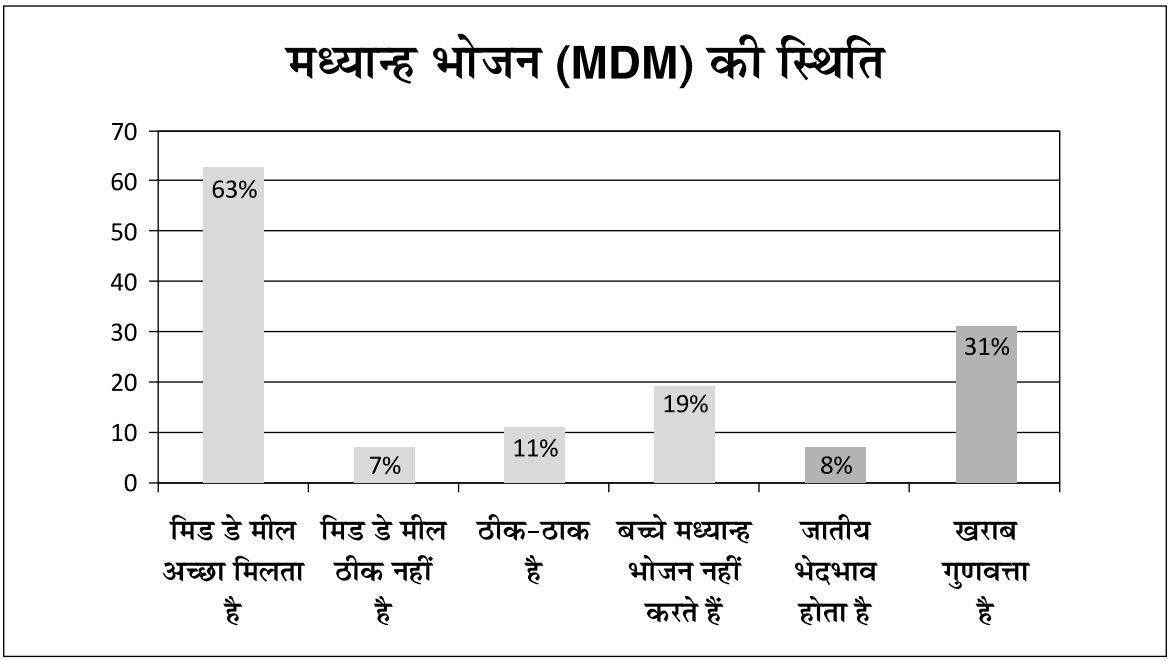

चूँकि इस सर्वे में आठवीं कक्षा से ऊपर की कक्षाओं के बच्चे भी शामिल थे इसलिए उन बच्चों ने मध्यान्ह भोजन नहीं मिलता बताया है। क्या सभी बच्चे मिड डे मील करते हैं? सवाल के जवाब में जातिगत भेदभाव पूरी तरह से हमारे यहां खत्म नहीं हुआ है और बचपन में अगर यह बहुत मुखर होकर सामने आता है तो उसका प्रभाव बालमन पर बहुत गहरा पड़ता है।

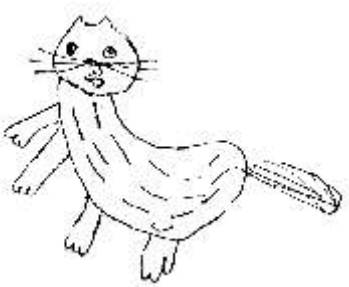

चित्र : सुषमा

“

हमारे गांव के लड़के अच्छे नहीं है वे कभी किसी से नहीं डरते हैं और
अपने माता—पिता की कोई बात नहीं सुनते हैं, जो लड़के अपनी मर्जी से गलत काम करते हैं।
– **रामदेवी,** उम्र 16 साल, जिला छतरपुर

”

3

शिक्षकों की संख्या व गुणवत्ता

कक्षा में शिक्षक नहीं आते हैं। हमारी कक्षा में शिक्षक बहुत कम आते हैं, जिससे पढ़ाई कम होती है। हम चाहते हैं कि हमारी कक्षा में शिक्षक आएं और हम सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले।

राजकुमार
उम्र 11 साल, जिला रीवा

- **64% बच्चों ने बताया कि उन्हें 3 से ज्यादा शिक्षक पढ़ाते हैं।**
- **25% बच्चों ने बताया कि उन्हें 2 शिक्षक पढ़ाते हैं।**
- **8% बच्चों ने बताया कि उन्हें 1 शिक्षक पढ़ाते हैं।**
- **3% बच्चों ने बताया कि उन्हें पढ़ाने के लिए 1 भी शिक्षक नहीं हैं।**

ज्यादातर लड़कियों को घर से बाहर नहीं भेजा जाता है, क्योंकि कोई लड़के हमारी बेटियों को गलत नजर से न देखें। यदि लड़कों की नजरें हर लड़की को बहन के नजरिया से देखे तो हम एक स्वतंत्र तरीके से हर जगह जा सकती हैं।

– **पूजा,** उम्र 16 साल, जिला छतरपुर

स्कूलों में पढ़ाई और शिक्षकों की संख्या को लेकर बच्चों की आवाज सामने आई। ज्यादातर बच्चों ने शिक्षकों की संख्या व पढ़ाई के बारे में कहा कि इसमें और सुधार होने की आवश्यकता है।

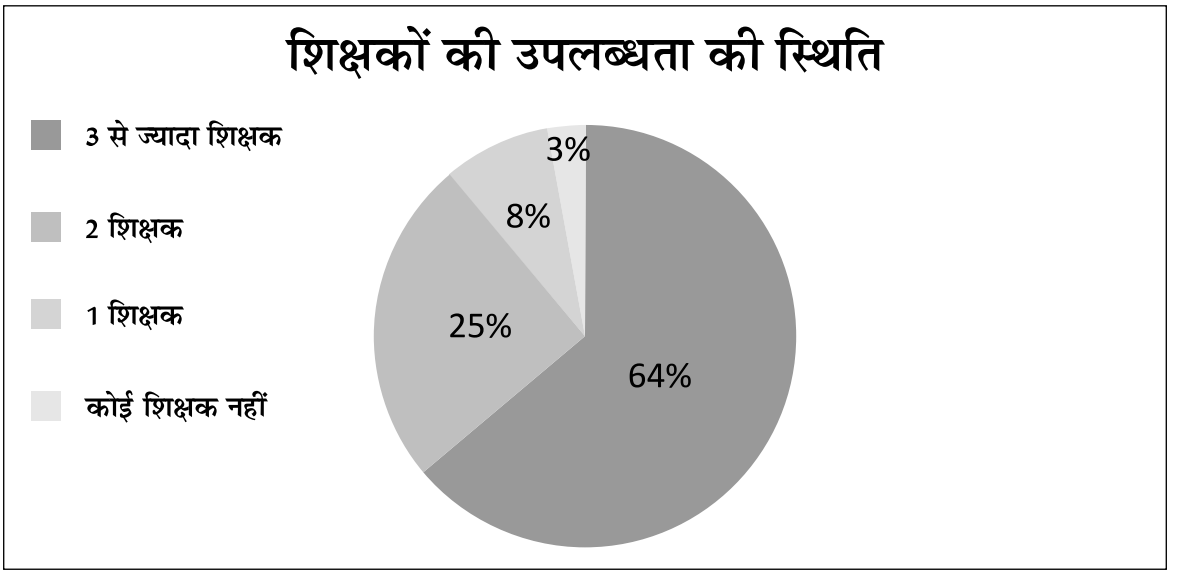

जहां 1 शिक्षक हो या 1 भी शिक्षक नहीं हो वहां पढ़ाई की हालात का अंदाजा खुद ही लगाया जा सकता है। इसलिए 'पढ़ाई कैसी होती है' सवाल के जवाब में, बच्चों ने यह राय दी-

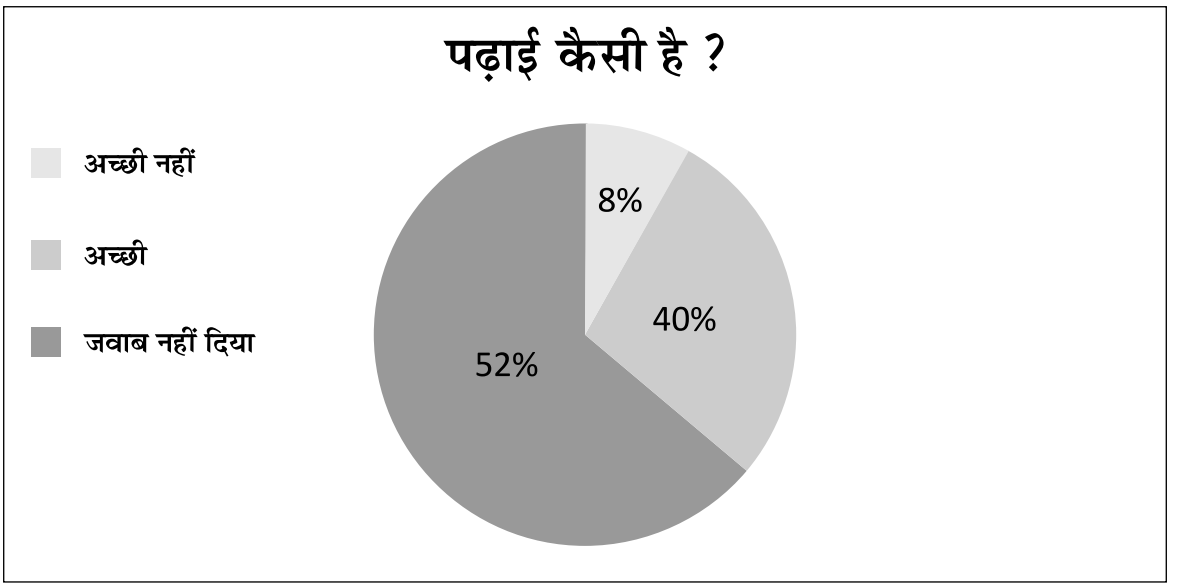

"

मैं पढ़—लिख कर कुछ बनना चाहती हूं और अपने मां—पापा का सपना पूरा करना चाहती हूं।
उनको कुछ कर दिखाना चाहती हूं।
– **सुरभि,** उम्र 16 साल, जिला छतरपुर

"

4

पुस्तकालय, खेल सामग्री, मैदान

मुझे स्कूल जाना बहुत अच्छा लगता है और खेलना अच्छा लगता है। जब कोई लड़का-लड़की स्कूल नहीं जाता है तो उसे मैं कहता हूँ कि तुम भी स्कूल चलो। मैं ऐसा कुछ करना चाहता हूं जिससे लोग या गांव वाले मुझे याद रखें। मैं एक अच्छा नागरिक बनना चाहता हूं और गांव वालों की मदद कर सकूं जिससे मेरे गांव वाले मुझे याद करें।

रोहित

उम्र 16 साल, जिला खण्डवा

- **47% बच्चों ने कहा कि उनके स्कूल में पुस्तकालय है ही नहीं।**
- **33% बच्चों ने बताया कि उनके स्कूल में पुस्तकालय है।**
- **20% बच्चों ने बताया कि उनके स्कूल में पुस्तकालय बंद रहता है।**
- **25% बच्चों का कहना है कि उनकी पसंद की किताबें नहीं हैं।**
- **8% बच्चों ने बताया कि किताबें मिलती ही नहीं हैं।**

मैं वैज्ञानिक बनना चाहता हूं, और
गरीब बच्चों की मदद करना चाहता हूं और पुलिस बनकर देश की रक्षा करना चाहता हूं।
– **रामदास,** उम्र 11 साल, जिला हरदा

एक अच्छे स्कूल में पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों के लिए अच्छे खेल मैदान, खेलों की सामग्री और पुस्तकालय जरूर होना चाहिए। बच्चों को दुनिया जहां की जानकारी और पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए स्कूलों में पुस्तकालय को लेकर बहुत सारी महत्वकांक्षी योजनाएं लागू की गयी हैं परन्तु बच्चों ने जो स्थिति बयां की है वो चिंतनीय है।

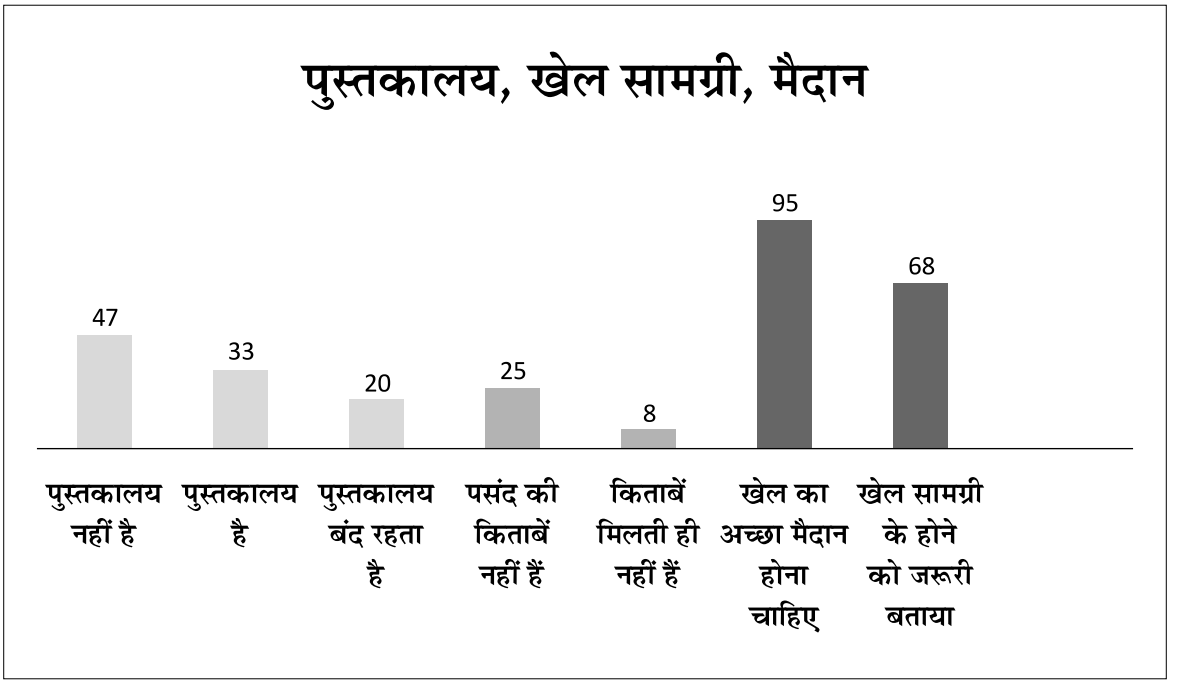

चित्र : स्मृति धाकड़

हम बहुत आगे बढ़ना चाहते हैं पर आय कम होने की वजह से कुछ बातें मन में ही रह जाती हैं,
हमें कुछ सरकारी सहायता मिलना चाहिए, मुझे समाजसेवा करना बहुत अच्छा लगता है, मैं गरीब बच्चों को फ्री में पढ़ाती हूं।
– **सलौनी,** जिला हरदा

5

हिंसा, अपमान व सुरक्षा

हमारी सोच यह है की सभी व्यक्तियों को एक समान होना चाहिए और किसी को किसी से भेदभाव नहीं करना चाहिये और हमारे गांव के सभी गरीबों के बच्चों को अच्छी शिक्षा मिलनी चाहिए और सभी बच्चों को सभी प्रकार की चीजें उपलब्ध करनी चाहिए। जैसे कि हम हरिजन आदिवासी बहुत गरीब लोग हैं, इसमें सरकार से मेरी गुजारिश है कि सभी की मदद करना चाहिए।

देवानंद

उम्र 16 साल, जिला रीवा

- **72% बच्चों ने कहा कि स्कूल में पिटाई नहीं होना चाहिए।**
- **46% बच्चों ने घर में पिटाई होने को सही कहा है।**
- **28% बच्चों ने कहा कि स्कूल, घर व बाहर उन्हें अपशब्द कहे जाते हैं।**

जब हम कोई गलती नहीं करते तो पुलिस से क्यों डरें।

– **सत्यनारायण,** उम्र 10 वर्ष, जिला रीवा

हिंसा किसी भी तरह की हो, वह गलत है। क्या किसी को भी कुछ सिखाने या समझाने का तरीका उस पर बल प्रयोग करना है? क्या पिटाई से बच्चे जल्दी और ज्यादा सीखते हैं? क्या इस पर कभी कोई रिसर्च और स्टडी हुई है?

भारत सरकार ने स्कूलों में बच्चों की पिटाई को बंद करने का कानून बनाया है। स्कूलों में बच्चों की पिटाई पर प्रतिबन्ध है। इस सर्वे में यह तथ्य सामने आया है कि स्कूलों में बच्चों की पिटाई और अपमान बदस्तूर जारी है।

75 प्रतिशत बच्चों ने बताया कि स्कूल में उनकी अलग-अलग तरीके से पिटाई होती है

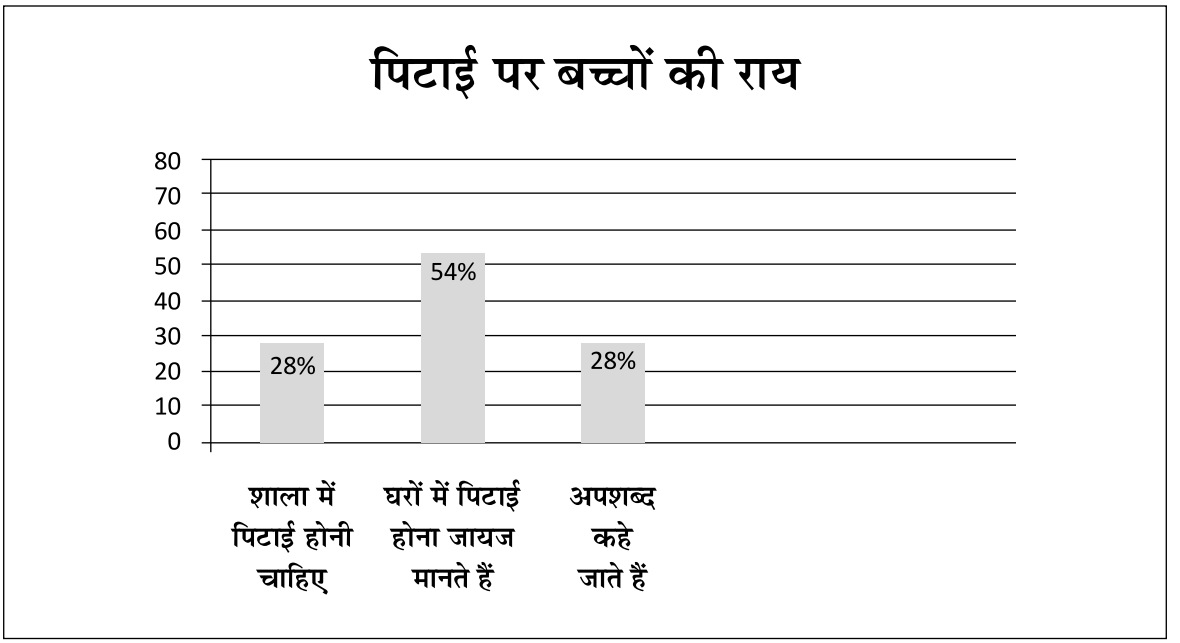

(चांटे, छड़ी, डस्टर, घुटना टेक इत्यादि) आम कहावत है की 'पिटाई पड़े धम-धम, विद्या आए छम-छम' और कहीं गहरे में यह बात शिक्षकों, पालकों में बैठी है और परिणाम यह है कि बच्चों के मन भी यह बात गहरे में बैठा दी गयी है, इसलिए कुछ बच्चों ने स्कूल व घर में होने वाली पिटाई को सही कहा है परन्तु अधिकांश बच्चों का कहना है कि स्कूल हो या घर कहीं भी पिटाई और अपमान नहीं होना चाहिए, अपशब्द नहीं कहने चाहिए। अगर हम गलती करें तो हमें प्यार से समझाना चाहिए। बच्चे स्कूल जाने से क्यों कतराते हैं यह जानना जरूरी है क्योंकि कई बार कुछ इस तरह के कारण होते हैं जिन्हें शिक्षक, पालक बहुत हल्के में ले लेते हैं और बच्चों को ही दोष देते हैं। जबकि यह कारण बहुत गंभीर होते हैं और बच्चों को मानसिक रूप से बहुत परेशान करते हैं।

"

हमारे स्कूल में पढ़ाई होती है, लेकिन हमारे टीचर बहुत मारते हैं,
लेकिन हम बच्चों को भी स्कूल जाना चाहिए।
– **दयाराम,** उम्र 15 साल, जिला सतना

"

हमने बच्चों से पूछा कि क्या आपको अपना स्कूल सुरक्षित लगता है?

इस सवाल पर 82% बच्चों ने सुरक्षित बताया।

18% बच्चों ने कहा है कि स्कूल सुरक्षित नहीं है।

इसके कारण में बिल्डिंग की हालत, बाहरी तत्व आते हैं, कक्षा के लड़के-लड़की डराते हैं, इत्यादि बताया।

स्कूल जाते समय डर लगता है क्या? सवाल के जवाब में बच्चों ने यह राय दी।

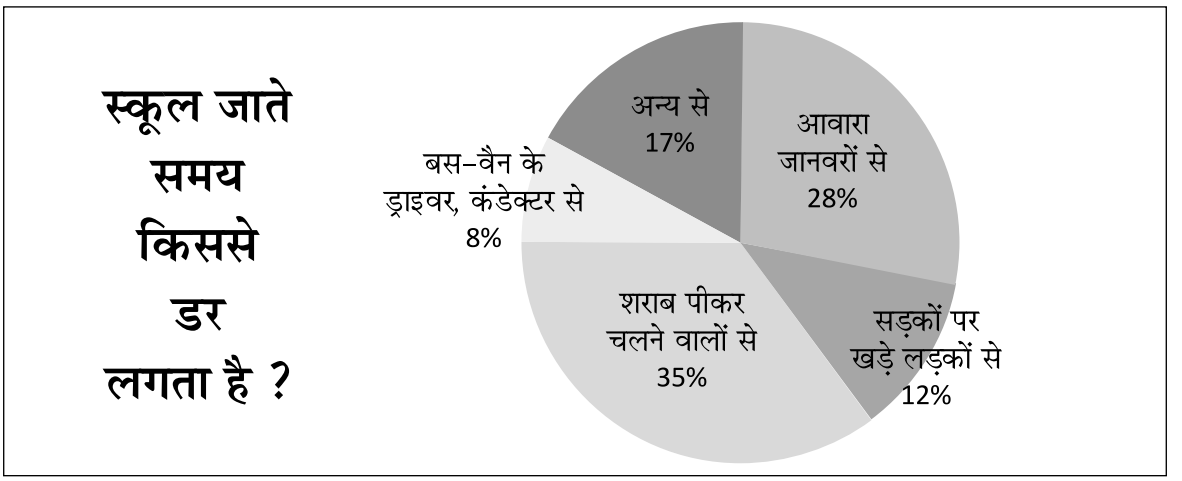

इस भाग में कुल मिलाकर देखें तो बच्चों के अधिकारों की स्थितियां सामने आती हैं। जैसे शौचालय के लिए नारा लगता है कि 'घर हो या विद्यालय हर जगह हो शौचालय' लेकिन बच्चों ने तो अलग ही हालात बताए हैं कि बहुत से स्कूलों में शौचालय ही नहीं हैं और हैं भी तो गंदे हैं या ताला लगा है।

सरकारी योजनाओं में बहुत से स्कूलों में शौचालय बनवाए गए हैं परन्तु देखने में आया है कि कुछ सरकारी स्कूलों में शिक्षक शौचालय में ताला लगा कर रखते हैं और कहते हैं कि बच्चे गन्दा कर देते हैं और अधिकारी हमें डांटते हैं इसलिए ताला लगा कर रखते हैं। वहीं कुछ शिक्षक कहते हैं कि बच्चों को जरुरत होती है तो हम ताला खोल देते हैं। ये बातें हैरान कर देती हैं कि जिस कारण और जिनके लिए शौचालय बनाया गया है वही उसका इस्तेमाल नहीं कर सकते? अगर गन्दा होता है तो साफ़-सफ़ाई की जा सकती है, बच्चों को समझाया जा सकता है पर स्कूलों में साफ़-सफ़ाई करेंगे कौन जबकि कई बच्चों ने बताया कि स्कूल की साफ़-सफ़ाई और पानी भरने का काम तो खुद बच्चे ही करते हैं। कम ही स्कूलों में चपरासी हैं और निश्चित ही वो शौचालय तो साफ नहीं करेंगे? तो सवाल उठता है कि बच्चे हैं इसलिए उनके साथ चाहे जैसा व्यवहार किया जा सकता है और ये माना जा सकता है कि वो तो कहीं भी शौच कर सकते हैं? मध्यान्ह भोजन में भेदभाव की बात भी आई है कि कुछ बच्चे छुआछूत के कारण मध्यान्ह भोजन ही नहीं करते। मध्यान्ह भोजन की ख़राब गुणवत्ता, शौचालय का न होना या गन्दा होना, पिटाई, अपमान, गंदगी, शिक्षकों की कम संख्या, भेदभाव इत्यादि समस्याएं जहां हों वहां बच्चों के हालात और शिक्षा की गुणवत्ता क्या होगी इसका अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है।

"

आपके द्वारा किया गया सर्वेक्षण मुझे अच्छा लगा
क्योंकि इसमें बच्चों के अंदर का जो डर, उनमें भय है वो कम हो जाएगा।
– **प्रवीण,** उम्र 18 साल, जिला खंडवा

"

6

यौन हिंसा

मेरे साथ एक लड़के ने मुझको गंदा तरीके से कोशिश की, लेकिन मैं समझ गई, फिर उसके साथ कोई बातचीत नहीं की।

ललिता (बदला नाम)
जिला सतना

- **87% बच्चों का कहना है कि उनकी इच्छा के विरुद्ध शरीर को यहां वहां छूना गलत है।**
- **91% बच्चों ने अपशब्द कहने और गालियां देने को गलत बताया है।**
- **6% बच्चों ने बताया कि यौन हिंसा होने पर वह चुप रहे, उन्होंने किसी को इस बारे में नहीं बताया।**

मुझे स्कूल जाना बहुत अच्छा लगता है और जो स्कूल नहीं जाता है मुझे बहुत बेकार लगता है।
– **कुंअरसिंह,** उम्र 15 साल, जिला खंडवा

यौन हिंसा ऐसी हिंसा है जिसमें ज्यादती सहने वाले ज्यादातर चुप रहते हैं या परिवार-समाज द्वारा चुप करवाए जाते हैं। बच्चों के साथ यौन हिंसा-ये बहुत ही संवेदनशील मुद्दा है और इस प्रश्न पर ज्यादातर बच्चे जवाब नहीं देंगे, यह अनुमान पहले ही से था उसके बावजूद 12 प्रतिशत बच्चों ने कहा कि उनके साथ यौन हिंसा हुई है, ऐसी घटना होने पर ज्यादातर बच्चे चुप रह जाते हैं। यह बताता है कि बच्चे कितने असुरक्षित व भय में हैं। बच्चे किनसे कहें अपनी समस्याएं क्योंकि बड़ों की दुनिया में उनकी सच्चाइयों को नकार दिया जाता है, उलटे उन्हें ही गलत ठहरा दिया जाता है।

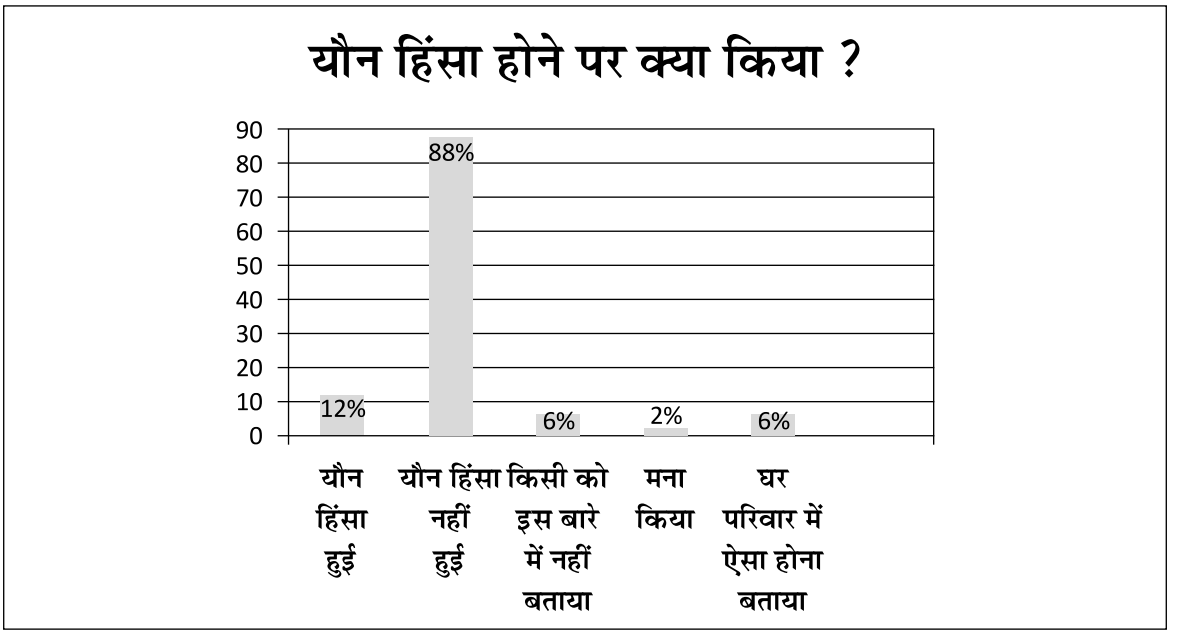

यह सच है कि पारिवारिक ढांचे में बच्चों की कोई नहीं सुनता, वो भी यौन शोषण जैसे संवेदनशील विषय पर सम्बन्धों, परिवार की मर्यादा आदि की आड़ लेकर बच्चों को चुप कर दिया जाता है, इसलिए बाल उत्पीड़न के वही मामले दर्ज होते हैं जिसमें शारीरिक क्षति होती है। हमें बच्चों के अंदर के इंसान को जिन्दा रखना होगा। बाल यौन उत्पीड़न एक स्वस्थ बाल मस्तिष्क को हमेशा के लिए बिखरा देता है जिससे बच्चों में व्यवहार संबंधी अनेक तरह की मनोवैज्ञानिक समस्याएं पैदा हो जाती हैं जिसका परिणाम एक खराब व्यक्ति के रूप में आता है। बच्चों के खिलाफ किसी भी प्रकार की हिंसा को जायज नहीं ठहराया जा सकता। चाहे वह पारंपरिक रूप में हो या अनुशासन के रूप में।

यह अस्वीकार्य है और इसे आज ही समाप्त किया जाना चाहिए। बच्चों के खिलाफ हर दिन हिंसा होती है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे अमीर हैं या गरीब, युवा हैं या किशोर, लड़के हैं या लड़कियां या फिर शहरी हैं या ग्रामीण। सभी इसके शिकार होते हैं। और यह सब हमारे आसपास ही होता है। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि कोई इसके खिलाफ चुप्पी नहीं तोड़ता। बच्चों

“

हम पढ़ लिख कर कुछ बनना चाहते हैं और मैं बैंक मैनेजर बनना चाहती हूं।
– **भारती,** उम्र 17 साल, जिला खंडवा

”

के खिलाफ हिंसा की समाप्ति एक चुनौतीपूर्ण कार्य है, क्योंकि प्राय: चुप्पी के कारण वे पीड़ित होते हैं। मुद्दों के प्रति यह चुप्पी समस्या को बढ़ा देती है। बच्चों के खिलाफ हिंसा एवं यौन शोषण को रोका जा सकता है। हिंसा के चक्र को तोड़ना बिल्कुल संभव है। यह हमारा नैतिक और मानवीय दायित्व है कि इसके खिलाफ आवाज उठाएं। इसे हम आज से ही शुरू कर सकते हैं।

बच्चों के कई-कई सपने हैं, वो खूब पढ़ना चाहते हैं, अच्छा जीवन जीना चाहते हैं, अपने परिवार की मदद करना चाहते हैं, समाज में अच्छे नागरिक बनना चाहते हैं।

इस सर्वे में 49% बच्चों ने कहा है कि उनका सपना है कि वो अच्छा इंसान बनना चाहते हैं। पर बचपन में इतने भयानक कड़वे अनुभवों के बाद क्या वो अच्छे इंसान बन पाएंगे?

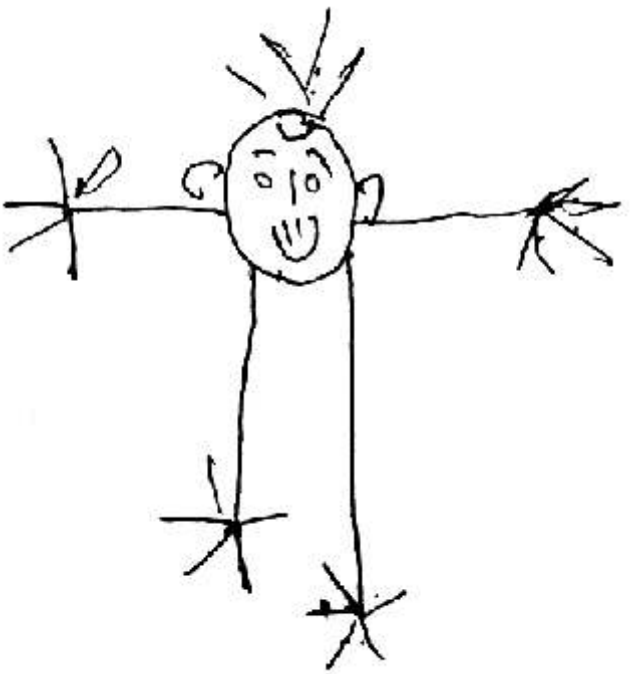

इस चित्र पर बच्चे ने अपना नाम नहीं लिखा है

“

मेरे स्कूल में अभी तक हमें स्कॉलर नहीं मिली है।
हमें स्कूल आते समय बहुत डर लगता है, इसलिए हम लोग ज्यादा स्कूल नहीं आते हैं।
– **सलिता,** उम्र 16 साल, जिला खंडवा

”

7

परिवार में बच्चों की स्थिति

मेरी मां शादी में पूड़ी बेलने का काम करती है, जो हमेशा नहीं चलता। इस कारण मुझे सड़क किनारे गुटका, टॉफी, मूंगफली आदि की ठिलिया लगाना पड़ता है, जिसमें पढ़ने वाला समय बर्बाद हो जाता है। यदि मुझे कुछ मदद मिले तो मैं अच्छा पढ़ सकता हूं।

रामबाबू
जिला छतरपुर

क्या आप परिवार के निर्णयों में शामिल होते हैं ? इस सवाल के जवाब में

- **28% बच्चों ने कहा कि कभी नहीं।**
- **36% बच्चों ने कभी-कभी शामिल होते हैं कहा।**
- **36% बच्चों ने कहा की वो हमेशा परिवार के निर्णयों में शामिल होते हैं।**

मैं एक बात कहना चाहता हूं कि मेरे गांव में पानी की कमी चल रही है।
– **रामचंद्र,** उम्र 14 साल, जिला खंडवा

परिवार में होने वाले निर्णय बच्चों को बहुत प्रभावित करते हैं। परिवार में होने वाली अच्छी बुरी स्थितियों को बच्चे बहुत गंभीरता से समझते हैं और उनको लेकर बच्चों की राय भी होती है।

बच्चे अपनी राय या सलाह परिवार के बड़े सदस्यों को बताते हैं या बताना चाहते हैं किन्तु अक्सर ही बड़ों द्वारा उन्हें 'तुम अभी बच्चे हो चुप रहो' कहकर खामोश करा दिया जाता है। जबकि बच्चों को परिवार की हर स्थितियों से अवगत करवाते हुए उनकी सलाह को भी महत्व दिए जाने की जरुरत है।

परिवार में जिस तरह से पालन-पोषण या व्यवहार होता है, बच्चे उन्हीं बातों को आत्मसात करते हैं और बड़े होने पर भी उनका व्यवहार दूसरों के प्रति वही बनता है। परिवार में बच्चों की स्थिति क्या है इसको लेकर भी हमने कुछ सवाल बच्चों से किए।

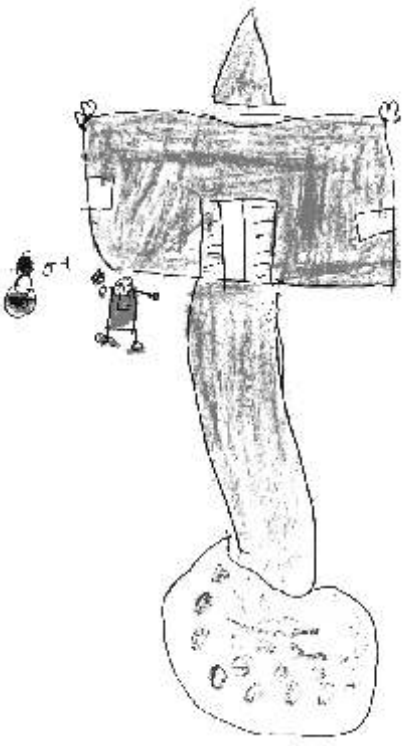

चित्र : वर्षा परिहार

"

हमें पढ़ना बहुत पसंद है। हम ऐसे ही पढ़ते रहें तो कुछ बन जाएं तो अच्छा है, हम यही दुआ करते हैं कि हमें अच्छा शिक्षक मिले, अच्छा ज्ञान मिले।

– **भारती,** उम्र 14 साल, जिला खंडवा

"

सवाल : परिवार में सबसे पहले खाना कौन खाता है?

जवाब : ⇨

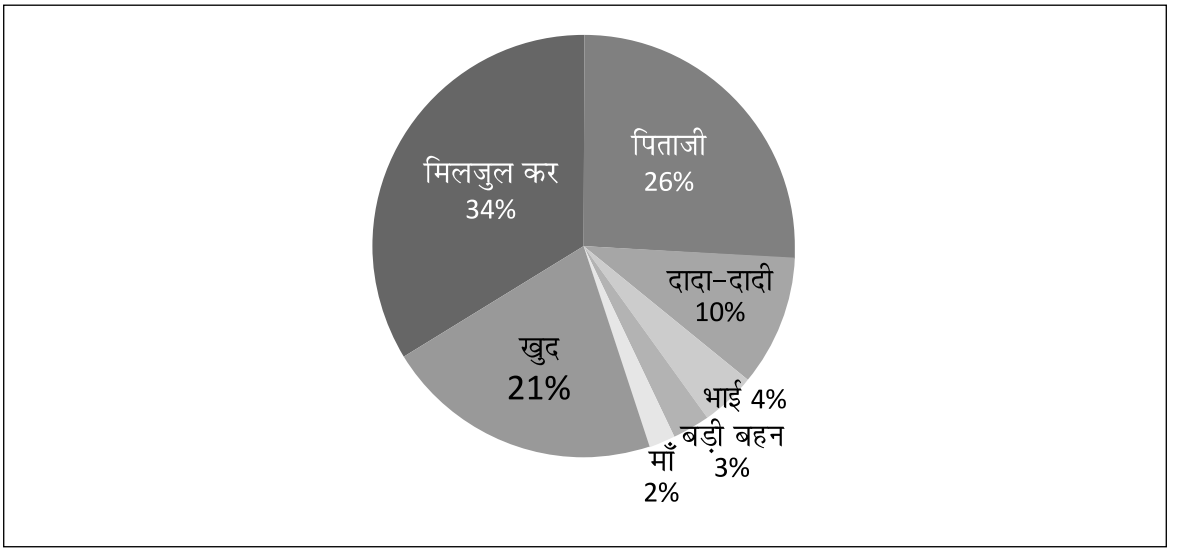

सवाल : बच्चों के पसन्द से खाना बनता है या नहीं?

जवाब : ⇨

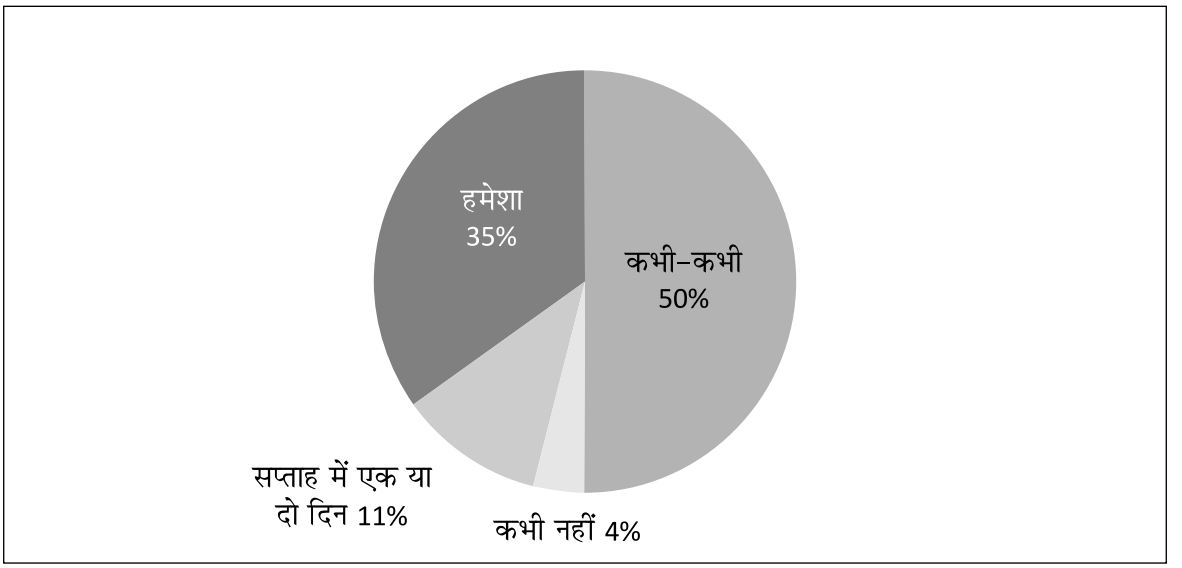

“

हमें आपसे यह तमन्ना है कि हमारे स्कूल में टीचर नहीं है।
टीचर भिजवाने की कृपा कीजिए, जिससे हमारी पढ़ाई हो सके।
– **शशिलेश,** उम्र 17 साल, जिला सतना

”

सवाल : कौन करता है घर में पिटाई?

जवाब : ⇨

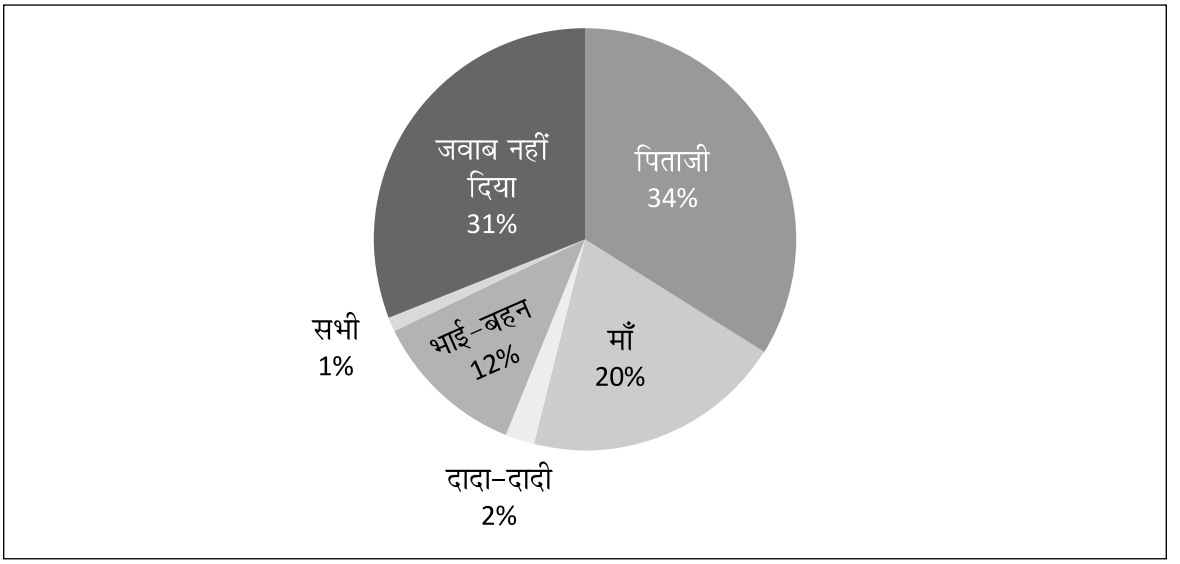

सवाल : बच्चे बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं ?

जवाब : ⇨

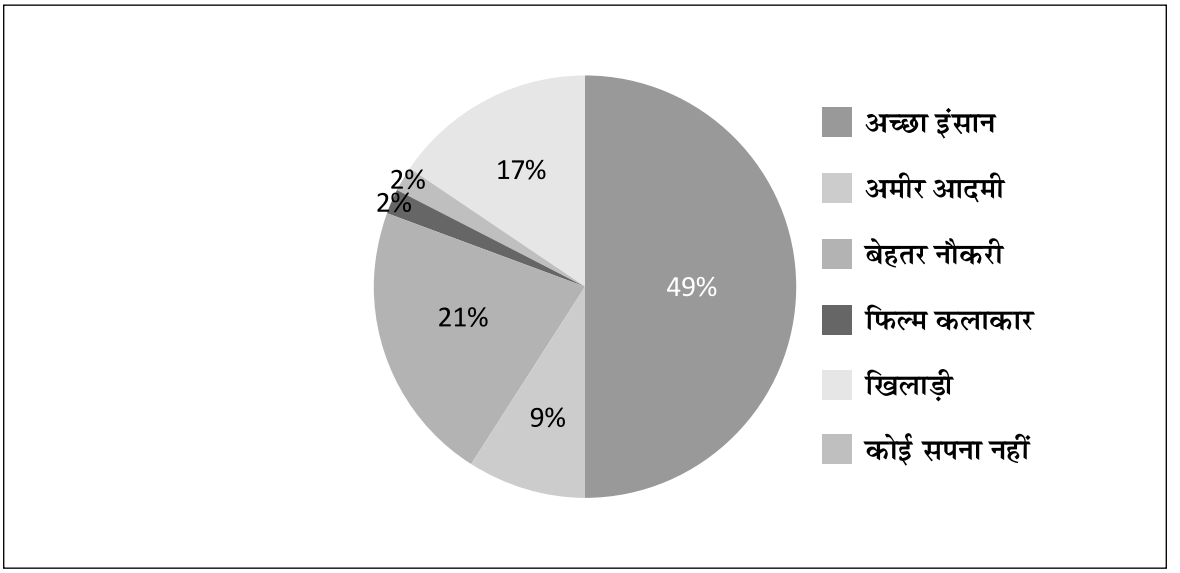

“

मेरा सपना है कि मैं पढ़—लिखकर अच्छा इंसान बनूं और अपने देश के लिए कुछ करूं।
– **शुभमोहन,** उम्र 15 साल, जिला खंडवा

”

सवाल : क्या आपके हाथ में किसी भी स्रोत से कोई धनराशि आती है ?

जवाब : ⇨

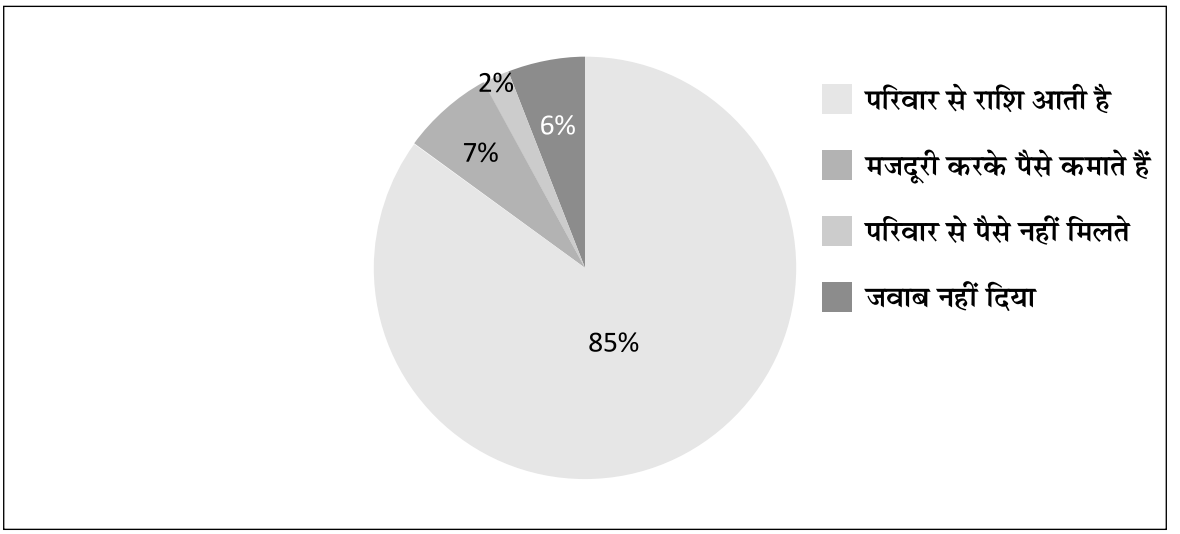

पैसों का कहां इस्तेमाल करते हैं सवाल के जवाब में पता चला कि

- **44% बच्चों ने कहा, खाने पीने में खर्च करते हैं।**
- **2% बच्चे तम्बाखू/गुटका के पाउच खरीदते हैं।**
- **11% बच्चे खेलने का सामान खरीदते हैं।**
- **8% खर्च नहीं करते।**
- **21% बच्चे पैसे घर में दे देते हैं।**
- **14% बच्चों ने जवाब नहीं दिया।**

चित्र : सुषमा

“

हमारे स्कूल में समय से क्लास नहीं लगती, समय से क्लास लगना चाहिए।

– **रूपेन्द्र,** उम्र 10 साल, जिला पन्ना

”

8

अस्पताल, बच्चे, स्वास्थ्य और सफाई

हमारे गांव में अस्पताल की व्यवस्था करवाई जाए, जिससे कि हमारे गांव के बच्चे बीमार न हों।

हेमंत कुमार पाठक

उम्र-15 साल, गांव-परागटोला, जिला- रीवा

- **39% बच्चों ने बताया कि उनके यहां अस्पताल नहीं हैं।**
- **53% ने कहा कि उनके गाँव/शहर में अस्पताल की सुविधा है।**
- **8% बच्चों ने जवाब नहीं दिया।**

मेरा गांव पिछड़ा हुआ है उसमें न तो अच्छी सड़कें हैं और न ही सफाई होती है। पानी की समस्या तो सबसे बड़ी है। और कहना चाहूंगी कि शिक्षक को अच्छी शिक्षा प्रणाली अपनानी चाहिए।

– **कुमारी सपना,** उम्र 18 साल, जिला शिवपुरी

अगर स्वास्थ्य अच्छा हो तो सब कुछ अच्छा होता है। अगर हर गाँव, शहर में अच्छे अस्पताल और डॉक्टर हों तो वहां जीवन अन्य जगह से बेहतर ही होगा। साथ ही अगर साफ़-सफ़ाई रखी जाए तो बीमारियों का खतरा भी कम होगा।

बीमारियों और अस्पताल की सुविधा को लेकर सवालों के जवाब में बच्चों ने यह जवाब दिए

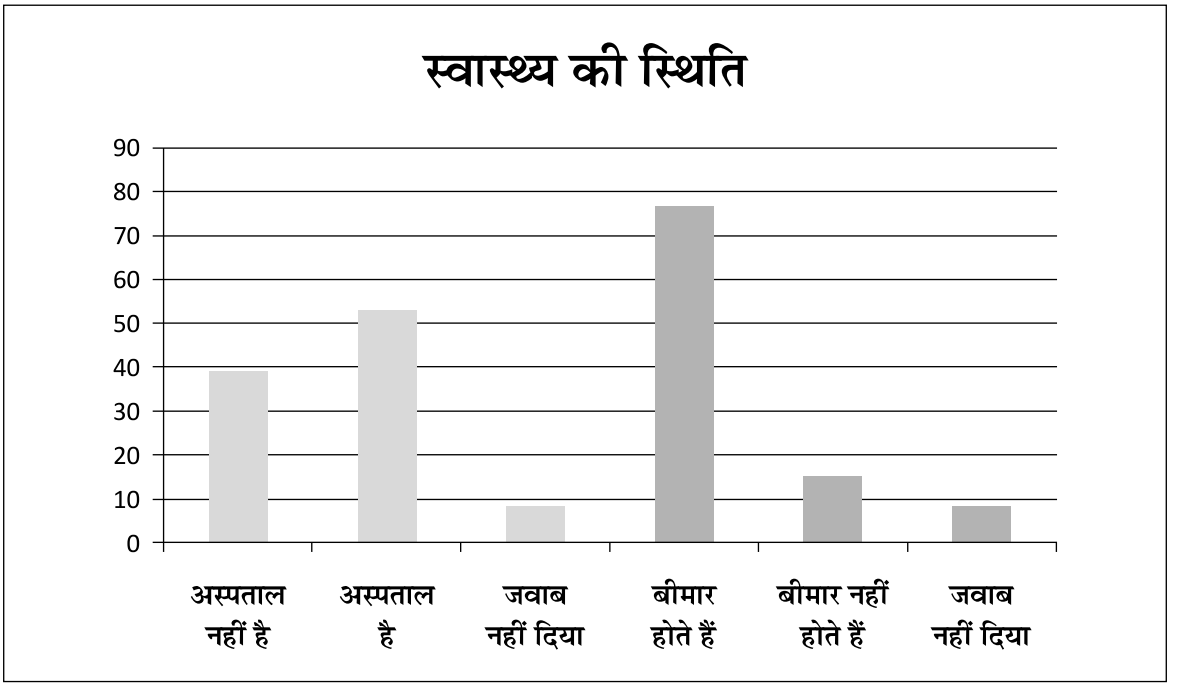

बीमारी का प्रकार पूछे जाने पर 77% बच्चों में से

- **7% ने सामान्य बीमारी**
- **14% ने गंभीर बीमारी होना बताया**
- **79% बच्चों ने कोई जवाब नहीं दिया।**

चित्र पर बच्चे ने अपना नाम नहीं लिखा है।

"मेरा जिला कुपोषण, गरीबी, अज्ञानता, निर्धनता आदि की समस्याओं से ग्रस्त है एवं जानकारी का बहुत ज्यादा अभाव है। मैं चाहता हूं कि स्वास्थ्य में सुधार होना चाहिए। मेरे जिले में एक मेडिकल कॉलेज होना चाहिए।

– **हरिराम,** उम्र 16 साल, जिला खंडवा"

9

टीकाकरण

टीकाकरण से तंदुरुस्ती होती है, और बच्चों को बड़ी बीमारियां नहीं होतीं, जैसे टीबी, हैजा, पोलियो आदि।

रंजन

उम्र-10 साल, जिला- रीवा

- **78% बच्चों को सभी टीके लगे हैं।**
- **14% को नहीं लगे हैं।**
- **8% ने कोई जवाब नहीं दिया है।**

हर गांव में आंगनवाड़ी होना जरूरी है, हर गर्भवती महिला को टीकाकरण करवाना चाहिए, ताकि बच्चा स्वस्थ हो और पोलियो की दवा पिलानी चाहिए।

– **पूजा,** 16 साल, जिला छतरपुर

टीकाकरण बच्चों के स्वास्थ्य के नजरिए से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययन बताते हैं कि कुल होने वाली मौतों में से 65 प्रतिशत को रोका जा सकता है, यदि उनका पूर्ण टीकाकरण हो। तमाम कोशिशों के बाद अब भी टीकाकरण के दायरे में सभी बच्चे नहीं आ पाए हैं।

लेकिन इन सुविधाओं के बारे में बच्चे क्या सोचते हैं, इस संबंध में भी बच्चों से राय जानी। इसमें बच्चों ने कहा कि...

- **68% बच्चे चाहते हैं कि उनके आसपास गाँव-शहर में अस्पताल होने चाहिए**
- **86% बच्चे मानते हैं कि बच्चों को पूरे टीके लगने चाहिए**
- **89% बच्चों का कहना है कि हमें खुद भी साफ़-सफ़ाई से रहना चाहिए**
- **85% बच्चे मानते हैं की साफ़-सफ़ाई से बीमारियां कम होती हैं।**

कुपोषण बड़ी समस्या है जिससे निपटने के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं इसके बावजूद भी कुपोषण की स्थिति विकट है। भूख के कारण कमजोरी के शिकार बच्चों में बीमारियों से ग्रस्त होने का खतरा लगातार बना रहता है। इसके अलावा करोड़ों बच्चों का शारीरिक और मानसिक विकास नहीं हो पाता है क्योंकि उन्हें अपने शुरुआती वर्षों में पूरा पोषण नहीं मिल पाता है। बच्चों ने मध्याह्न भोजन मिलने को अच्छा बताया है परन्तु मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता पर सवाल उठाया है। सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण मध्यान्ह भोजन मिले इसकी जिम्मेदारी और जवाबदारी किनकी होना चाहिए? स्कूलों में मध्यान्ह भोजन के बावजूद भी कुपोषण की स्थितियां क्यूं बनी हुई हैं? यह सोचने और इस पर कुछ करने की जरुरत है। मध्यान्ह भोजन की मात्रा व गुणवत्ता और मेनू को फिर से जांचने और दुरुस्त करने की जरुरत है।

चित्र : अरबेरद धाकड़

मुझे अपने गांव की आंगनवाड़ी अच्छी नहीं लगती है, उसमें कुछ सुधार होना चाहिए
जैसे अच्छा भोजन, साफ—सफाई, टीकाकरण आदि।
– **आरती,** 6 साल, जिला शिवपुरी

बच्चों में बड़े स्तर पर बीमारियाँ होने के बावजूद बच्चों के स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव नज़र आता है। खासकर ग्रामीण इलाकों के अधिकांश स्वास्थ्य कार्यकर्ता और निजी चिकित्साकर्मी बच्चों की स्वास्थ्य सेवाओं के लिए प्रशिक्षित नहीं हैं। खास बच्चों की देखभाल के लिए चलाए गए एकीकृत बाल विकास कार्यक्रम भी पूरक पोषण और टीकाकरण तक ही सीमित रहते हैं। बच्चों ने चित्रों के माध्यम से अपने यहां अस्पतालों में ताला लगे रहने की बात कही है, बहुत सारे बच्चों ने गांव में अस्पताल न होना बताया है ऐसे में स्वास्थ्य सुविधाओं का क्या होगा यह विचारणीय है।

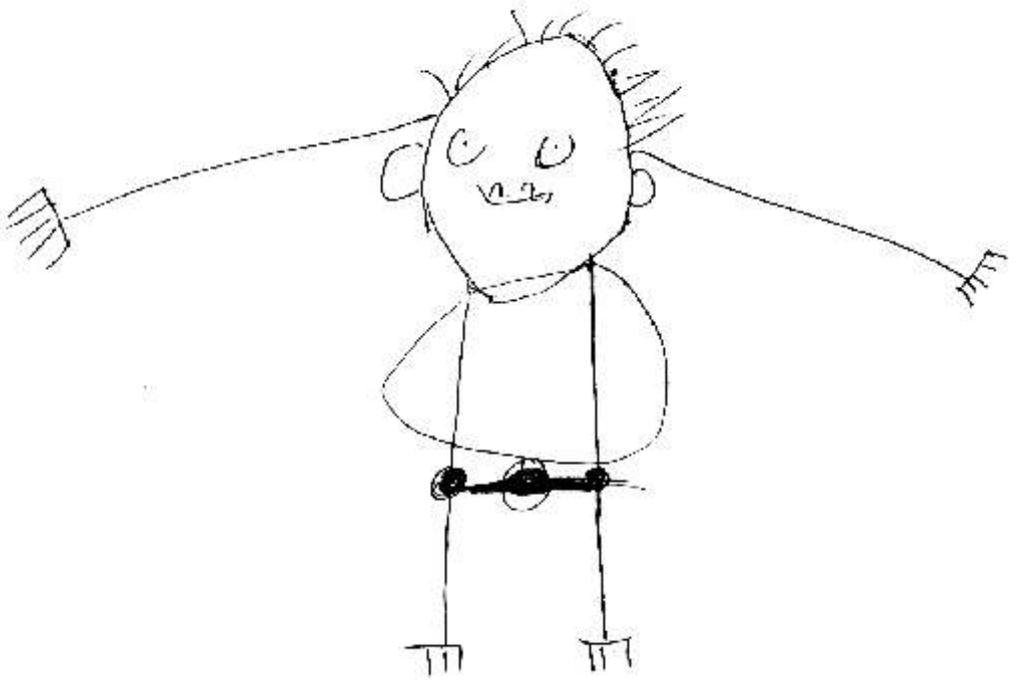

चित्र : उदयसिंह कुशवाह

“

हमारे माता-पिता का काम हमें अच्छा नहीं लगता हैं। क्योंकि वह मजदूरी करते हैं,
यह जब हम देखते हैं तो हमें बुरा लगता है।
– **धीरेन्द्र,** उम्र 15 साल, जिला सतना

”

10

लिंगभेद

लड़कियों को हर जगह संघर्ष क्यों करना पड़ता है। जहां देखो वहीं संघर्ष। अगर कोई कोचिंग रात को हो तो लड़की वहां नहीं जा सकती। क्यों नहीं जा सकती, क्योंकि घरवाले मना करेंगे और सब क्या कहेंगे, इतनी रात को कहां जा रही है। लेकिन अगर कोई लड़का उसी समय पढ़ने जा रहा है तो कोई उसे कुछ नहीं कहेगा, क्योंकि वह लड़का है।

अंजली
उम्र 17 साल, जिला छतरपुर

- **56% बच्चे पिताजी या भाई का भोजन बनाना गलत मानते हैं।**
- **44% बच्चे लड़कियों का गाड़ी चलाना गलत मानते हैं।**
- **36% बच्चे मानते हैं कि लड़का-लड़की एक समान नहीं होते।**
- **29% बच्चे लड़कियों के ज्यादा नहीं पढ़ने के पक्ष में हैं।**

मेरे भाई के लिए पापा जींस लाते हैं, तब मैं सोचता हूं कि मेरे लिए भी लाते। इस तरह का भेदभाव होता है।
– **संतोष,** 14 साल, जिला हरदा

हमारा समाज पितृसत्तात्मक समाज है और यहाँ लड़का-लड़की का बहुत भेद है। लड़कियां क्या काम करेंगी और लड़के क्या काम करेंगे यह पहले से ही परिवार / समाज द्वारा निर्धारित कर दिया जाता है और बच्चों के मन में भी यही धारणा भरी जाती है। परिवार हो या स्कूल या बाहरी समाज, हर जगह लड़कों को लड़कियों के मुकाबले ज्यादा महत्व दिया जाता है इसलिए ज्यादातर बच्चे इसी तरह से सोचने लगते हैं।

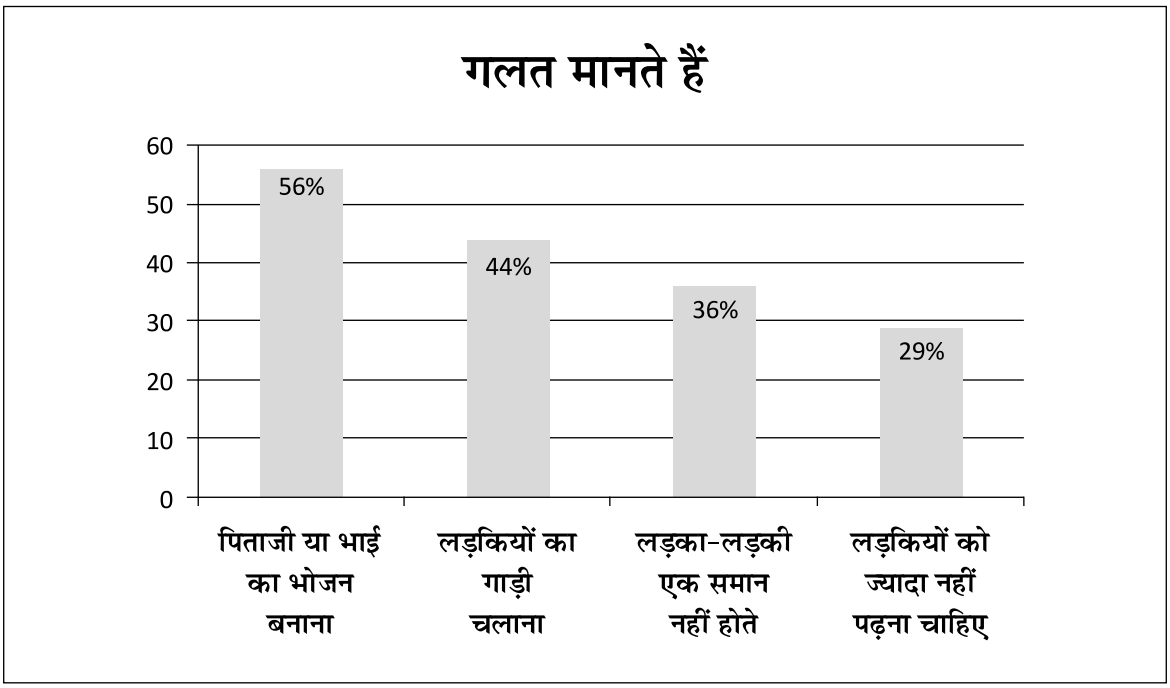

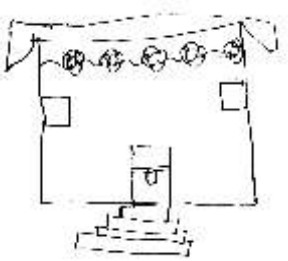

चित्र : स्मृति धाकड़

"

हमें भेदभाव लगता है, जातिवाद को लेकर ब्राह्मण के यहां खाना खाने पर लगता है।

– **दीपक,** उम्र 12 साल, जिला सतना

"

11

सोशल मीडिया और बच्चे

स्कूल में पढ़ाई नहीं होती है। दो साल हो गए हैं पर गणित के टीचर स्कूल में नहीं आए हैं। मैं इंटरनेट अपनी आवश्यकता के अनुसार चलाता हूं। पढ़ाई से संबंधित चीजें देखता हूं।

विशाल
उम्र 16 साल, जिला खंडवा

- **19% बच्चों के पास उनका मोबाइल है।**
- **71% बच्चों के पास मोबाइल नहीं है।**
- **10% ने जवाब नहीं दिया।**

हम यह कहना चाहते हैं कि हमारे गांव में, गांव के लोगों को अच्छा से अच्छा काम दिलवाएं, उनकी मजदूरी के सही पैसे दिए जाएं। ताकि हमारे गांवों का निर्माण हो सके। हमारे गांव के बच्चे पढ़-लिख सकें।

– **शशि,** उम्र 14 साल, जिला रीवा

आज का युग संचार क्रांति का युग है। आज हर व्यक्ति के हाथ में मोबाइल है। बड़े शहरों में लगभग हर बच्चे के पास मोबाइल है और वो सोशल मीडिया में सक्रिय हैं।

इस बारे में पूछे गए सवाल के जवाब में बच्चों ने बताया कि

ज्यादातर बच्चे परिवार में उपलब्ध मोबाइल का इस्तेमाल करते हैं।

11% बच्चों का सोशल मीडिया पर अकाउंट है।

7% व्हाट्सएप का उपयोग करते हैं।

6% फेसबुक पर हैं।

2% बच्चों ने कहा कि वो व्हाट्सएप और फेसबुक दोनों पर रजिस्टर्ड हैं पर इस्तेमाल नहीं करते।

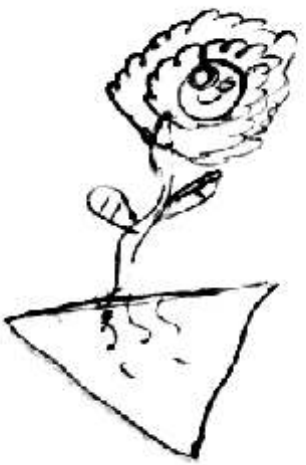

चित्र : सपना जाटव

“

हमें अपने माता-पिता का काम अच्छा भी लगता है और बुरा भी। बुरा इसलिए लगता हैं,
क्योंकि कभी-कभी उनको हमारे लिए समय नहीं मिल पाता है।
– **प्रियांक,** उम्र 14 साल, जिला उमरिया

”

12

स्कूल से बाहर बच्चे

मुझे भी शिक्षा की जरूरत है। इसलिए मेरे माता–पिता को सलाह देनी चाहिए कि मुझसे काम न करवाएं और पढ़ाएं ताकि मैं आगे चलकर कुछ बन सकूं। मेरे पिताजी को भी नौकरी देना चाहिए ताकि वो मुझे पढ़ा सकें।

सौफिया

उम्र 13 साल, जिला हरदा

- **7% बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं।**
- **90% बच्चों ने बाल मजदूरी को गलत कहा है।**
- **10% ने बाल मजदूरी को सही माना है ।**

जो दिव्यांग बालक या बालिका उन्हें सरकार द्वारा विकलांगता की सुविधा देना चाहिए।

– **वैशाली,** उम्र 17 साल, जिला खंडवा

हमारे समय की सबसे बड़ी त्रासदी जहां बचपन को ख़त्म करके बच्चों को वयस्क बनाने की साजिशें रची जाती हैं। किसी कारखाने में चले जाओ या होटलों में या कि फिर घरों में, बच्चे काम करते मिल जाते हैं। ये बच्चे काम तो करते ही हैं पर जरा सी गलती होने पर बड़ों की मार पिटाई भी झेलते हैं और अपमान तो इनका जब-तब किया जाता है।

जिस उम्र में इन्हें स्कूल में होना चाहिए, मजदूरी करने को मजबूर किए जाते हैं। इन्हें स्कूल भेजने की तमाम योजनाएं भी इस त्रासदी से बच्चों को नहीं उभार पा रही हैं।

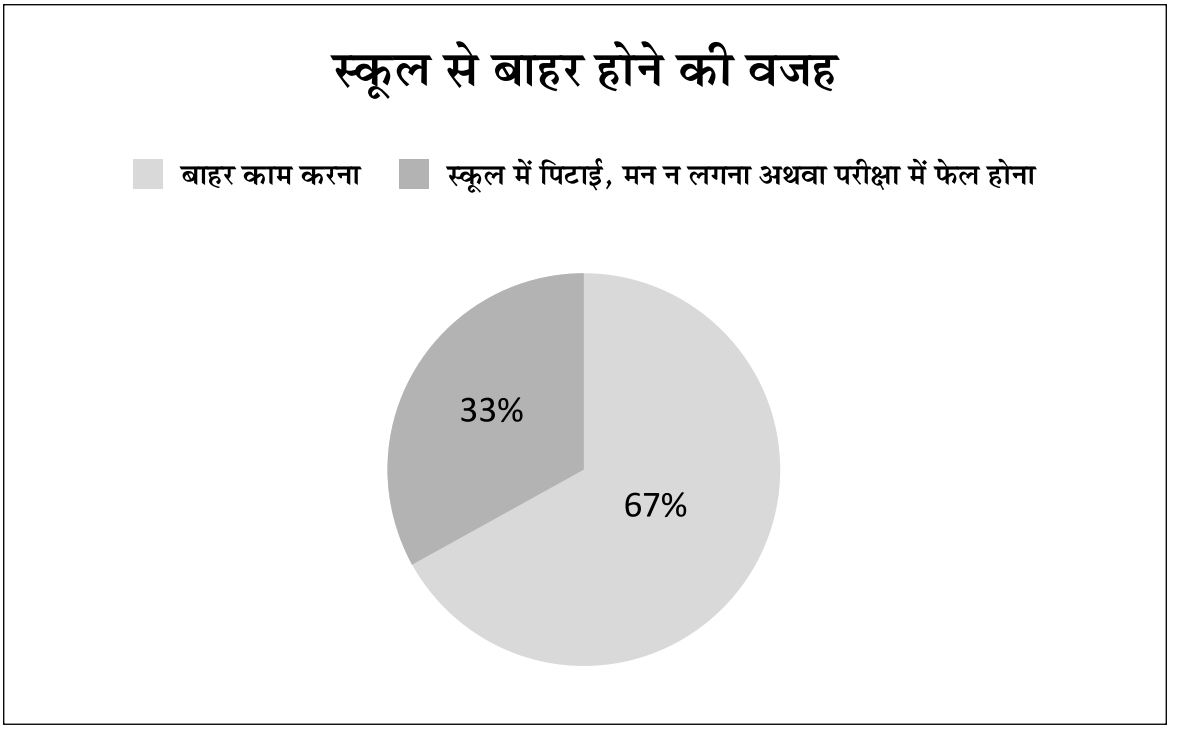

घर की आर्थिक स्थितियां, समाज में व्याप्त कुरीतियां, कुप्रथाएं व गलत मान्यताएं बच्चों को मजबूर करती हैं, बचपन में ही काम करने के लिए। बचपन हर एक के जीवन का सबसे खुशनुमा और जरूरी अनुभव माना जाता है क्योंकि बचपन बहुत जरूरी और दोस्ताना समय होता है सीखने का। अपने माता-पिता से, समाज से बच्चों को पूरा अधिकार होता है खास देख-रेख पाने का, प्यार और परवरिश का, स्कूल जाने का, दोस्तों के साथ खेलने का और दूसरे खुशनुमा पलों का लुफ्त उठाने का।

“

हमारे देश में बहुत गरीब लोग रहते हैं। गरीब लोगों की बात कोई नहीं समझता।
स्कूल जाते समय हमें बहुत डर लगता है।
– **शांति,** उम्र 14 साल, जिला छतरपुर

”

बाल मजदूरी हर दिन न जाने कितने अनमोल बच्चों का जीवन बिगाड़ रही है। ये बड़े स्तर का गैर-कानूनी कृत्य है जिसके लिए सजा होनी चाहिए, लेकिन अप्रभावी नियम-कानूनों से ये हमारे आस-पास चलता रहता है। बच्चे तो पढ़ना चाहते हैं तो फिर उन्हें बचपन में ही पढ़ाई छोड़ कर काम क्यों करना पड़ रहा है ये सोचने और इस पर कुछ करने की जरुरत है।

इस सर्वे 'बच्चों की आवाज' के माध्यम से प्रतिनिधि बच्चों ने अपनी राय / सलाह और जानकारियां दे दिए हैं अब समझने और उन पर काम करने की जिम्मेदारियां समाज की है।

सरकारी संगठन, गैरसरकारी संगठन, स्कूल, परिवार और समाज का दायित्व है कि वो बच्चों द्वारा दी गयी जानकारियों, सुझावों और सलाह के अनुरूप कार्य करके बेहतर स्थितियां निर्मित करें ताकि बचपन सुखद हो पाए और अपनी पूरी उम्र खुशहाल रूप से जी पाएं।

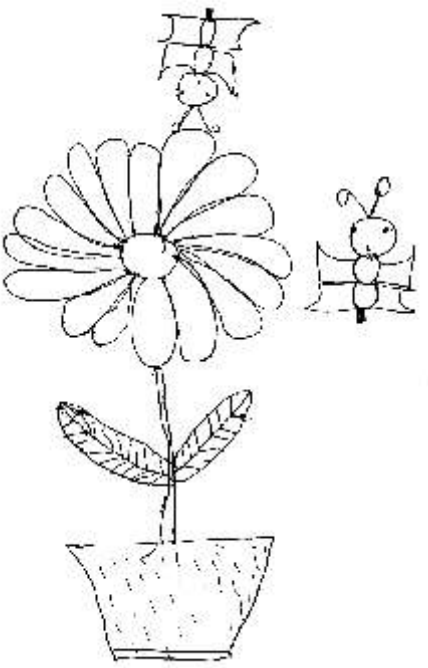

चित्र : स्मृति धाकड़

"

हमारे स्कूल में बहुत अच्छी पढ़ाई की जाती है। मेरा सुझाव यह है कि मेरी स्कूल कन्या हाई स्कूल है यह स्कूल हाई सेकण्डरी हो जाए, बस यही सुझाव देना चाहती हूं।

– **रुपाली,** उम्र 15 साल, जिला रीवा

"

13

बच्चों की नज़र में क्या सही, क्या गलत

हमारी सोच यह है की सभी व्यक्तियों को एक समान होना चाहिए और किसी को किसी से भेदभाव नहीं करना चाहिए और हमारे गांव के सभी गरीबों व्यक्तियों के बच्चों को अच्छी शिक्षा मिलनी चाहिए और सभी बच्चों का सभी बच्चों को सभी प्रकार की चीजें उपलब्ध करनी चाहिए जैसे कि हम हरिजन आदिवासी बहुत गरीब लोग हैं, इसमें सरकार से मेरी गुजारिश है कि सभी की मदद करना चाहिए।

देवानंद

उम्र 16 वर्ष, जिला रीवा

सभी धर्मों का सम्मान करना चाहिए

- **78% बच्चे सही मानते हैं।**
- **22% गलत मानते हैं।**

हम यह कहना चाहते हैं कि हमारे गांव में, गांव के लोगों को अच्छा से अच्छा काम दिलाया जाए, उनकी मजदूरी के उन्हें सही ढंग से पैसे दिए जाएं, ताकि हमारे गांव का निर्माण हो सके।

– **प्रिया,** 13 साल, जिला रीवा

बच्चों पर परिवार और समाज का बहुत प्रभाव पड़ता है, वो अपने आसपास जो व्यवहार बड़ों को करते हुए देखते हैं उसी तरह का व्यवहार वो करते हैं। बच्चों में अपनी सोच होती है और वो सही गलत का फैसला करते हैं पर वयस्कों के द्वारा लगातार बच्चों की अपनी सोच को ख़त्म किया जाता रहता है। इसलिए कुछ सवालों पर बच्चे असमंजस में दिखे और मिली-जुली राय दिए जो कि ऊपर के कथन को स्पष्ट करती है।

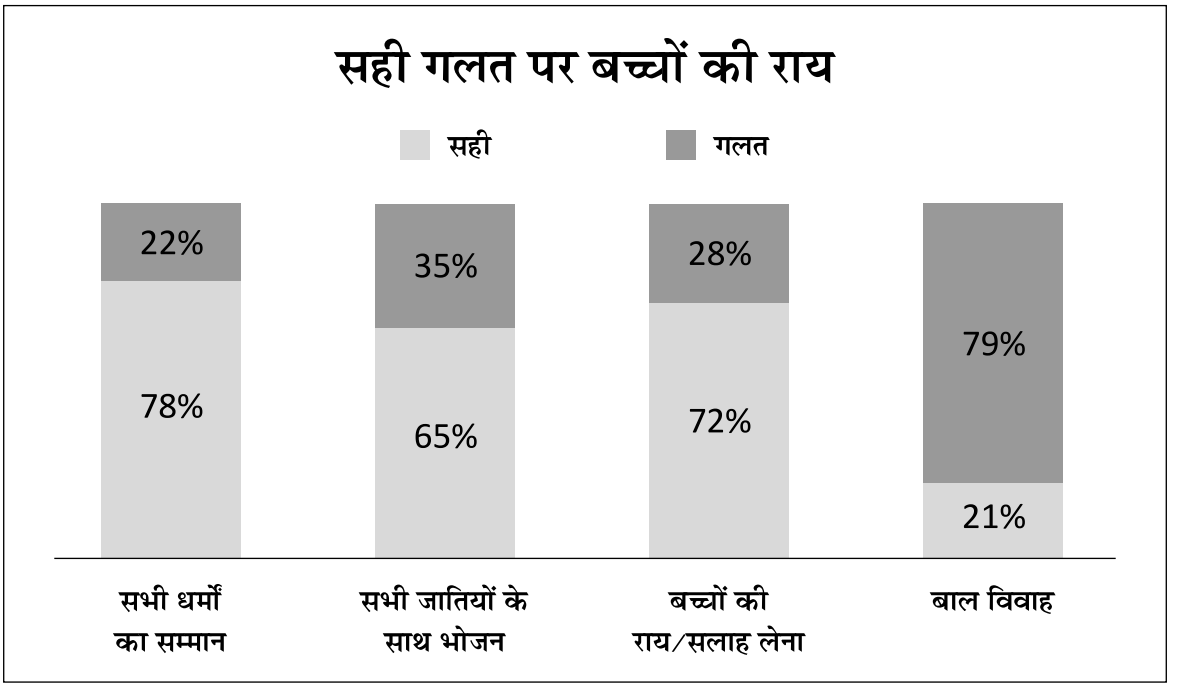

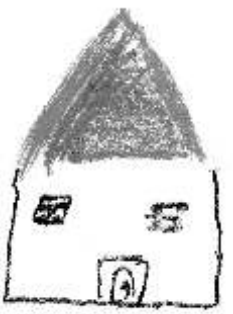

चित्र : सोनम सेन

“

स्कूल में जो पढ़ाई होती है। उसमें सुधार होना चाहिए शिक्षक सही समय पर नहीं आते और आते हैं, तो सही समय पर नहीं पढ़ाते हैं। गप्पे करते रहते हैं। इसका सुधार होना चाहिए।

– **दिवाकर,** उम्र 15 साल, जिला उमरिया

”

14

चित्र अभिव्यक्ति

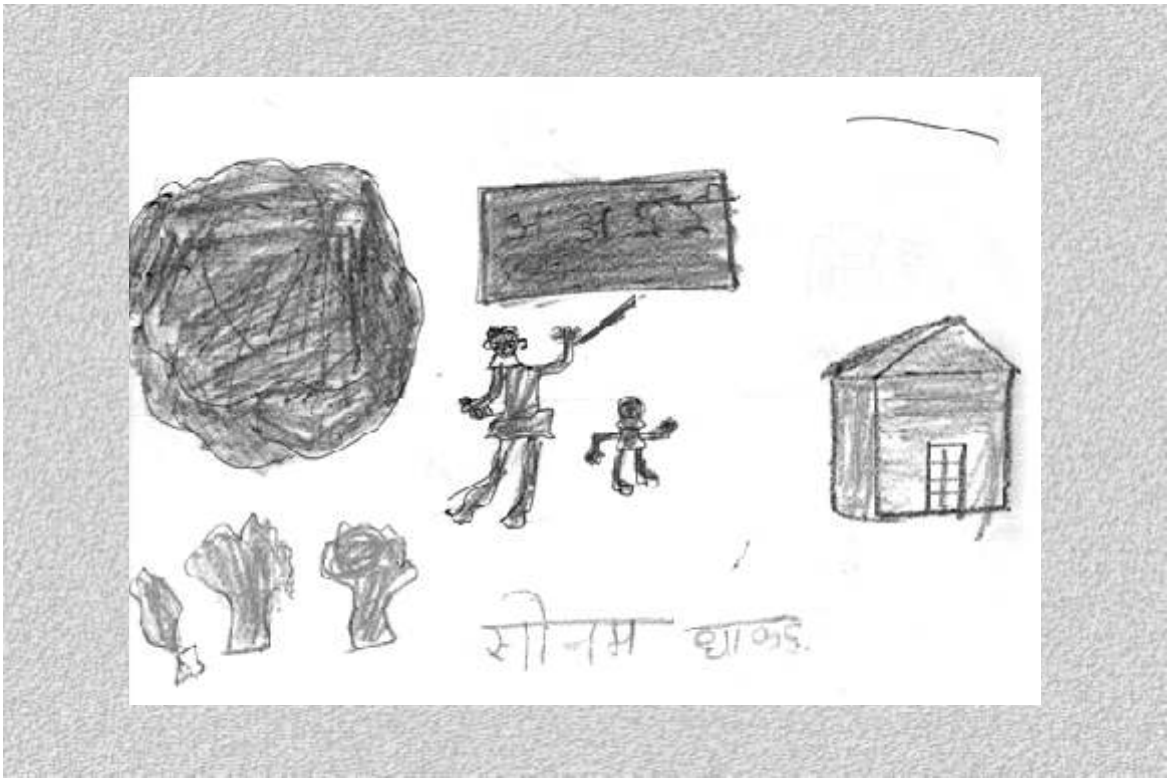

जहां शब्द की सीमा खत्म होती है वहां चित्रकारी का ही सहारा होता है। कभी-कभी चित्र वह सब कुछ कह जाते हैं जिसके लिए हजार शब्द भी कम पड़ जाते हैं। जाहिर है चित्र के सामने शब्द बौने पड़ जाते हैं। चित्र बनाना बच्चों का पसंदीदा काम है, इसके माध्यम से वो अपनी भावनाओं को बहुत ज्यादा अच्छे से अभिव्यक्त कर पाते हैं।

इस सर्वे 'बच्चों की आवाज' में एक टूल चित्र अभिव्यक्ति है। बच्चों ने बहुत सारे चित्रों के माध्यम से विभिन्न मुद्दों के बारे में अभिव्यक्ति दी है। हालांकि बहुत सारे बच्चों ने स्कूलों द्वारा कला के नाम पर सिखाये जाने वाले वही चित्र बनाये हैं जिनमें झंडा, फूल, मकान, नदी, मंदिर, पहाड़ इत्यादि दर्शाए जाते हैं, लेकिन इसके बावजूद भी बहुत सारे बच्चों ने इनसे अलग अपने आसपास घट रही घटनाओं और परिस्थितियां पर चित्र बनाने की कोशिशें की हैं और चित्रों पर उनके बारे में लिखा भी है।

हालांकि इस उम्र में सभी बच्चे वास्तविक चित्रकारी नहीं कर पाते इसलिए बहुत सारे बच्चों ने प्रतीकात्मक चित्र बनाये हैं। जैसे कि लम्बी दो रेखाएं खींचकर उनमें गोले-गोले बनाकर उन्होंने सड़कों में गड्ढों को दर्शाया है, इसी तरह से एक कमरेनुमा आकार बनाकर उसमें ताला लगाकर उन्होंने बंद अस्पतालों को दर्शाया है।

एक बच्चे ने गांव में पेयजल की समस्या को लेकर चित्र में एक हैंडपंप के सामने लाइन में बहुत सारे बर्तन और महिलाओं को दर्शाया है साथ ही पास में गंदगी को दर्शाने के लिए कीचड़ व सूअर का प्रतीकात्मक चित्र भी बनाया है।

बच्चों ने लगभग सभी मुद्दों जैसे बालश्रम, स्वास्थ्य, लिंगभेद, पर्यावरण, यौनहिंसा, शौचालय, स्कूल, पिटाई, स्वच्छता इत्यादि पर प्रतीकात्मक चित्र बनाये हैं।

यहां हम बच्चों के कुछ चित्र प्रस्तुत कर रहे हैं। इस रिपोर्ट में इस्तेमाल किए गए सारे चित्रों को बच्चों ने ही बनाया है।

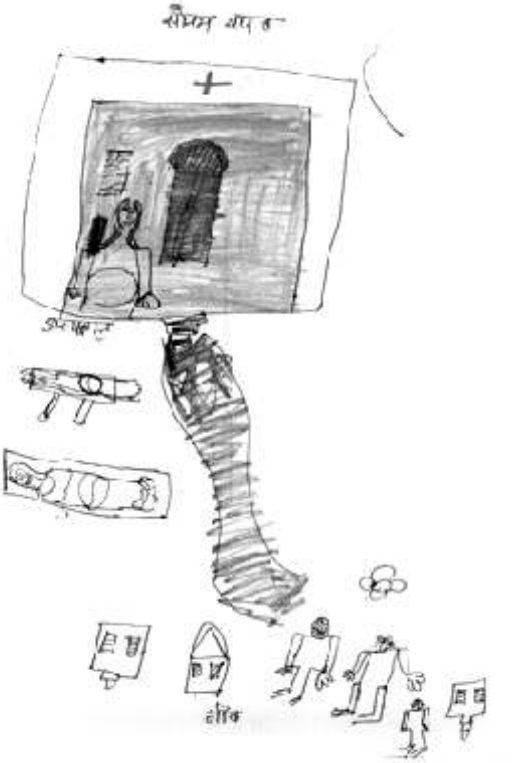

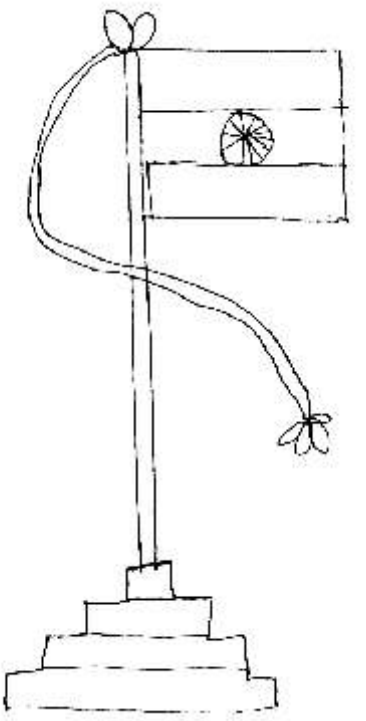

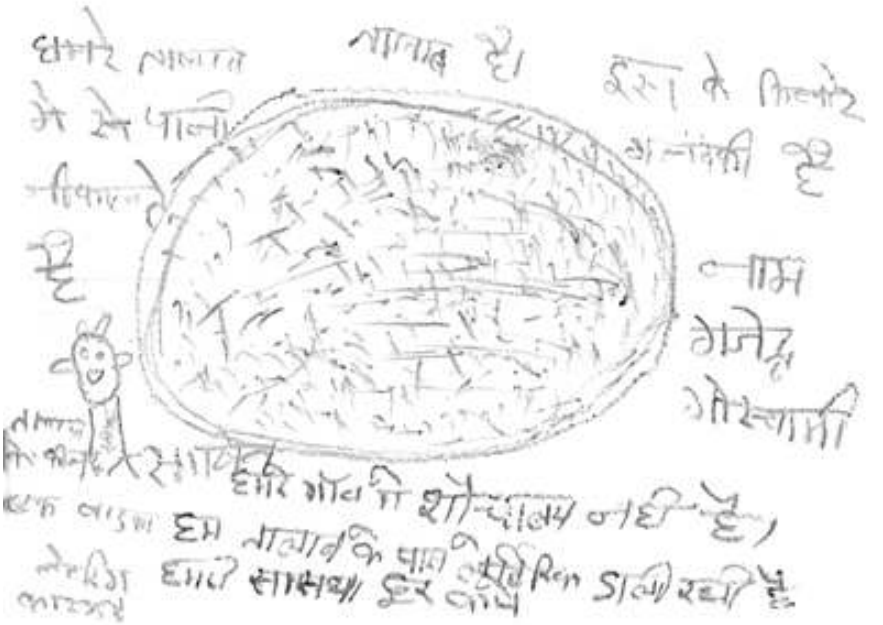

यह लड़का अपनी झोपड़ी में पानी ले जा रहा है लेकिन बेकार में पानी फेंक रहा है

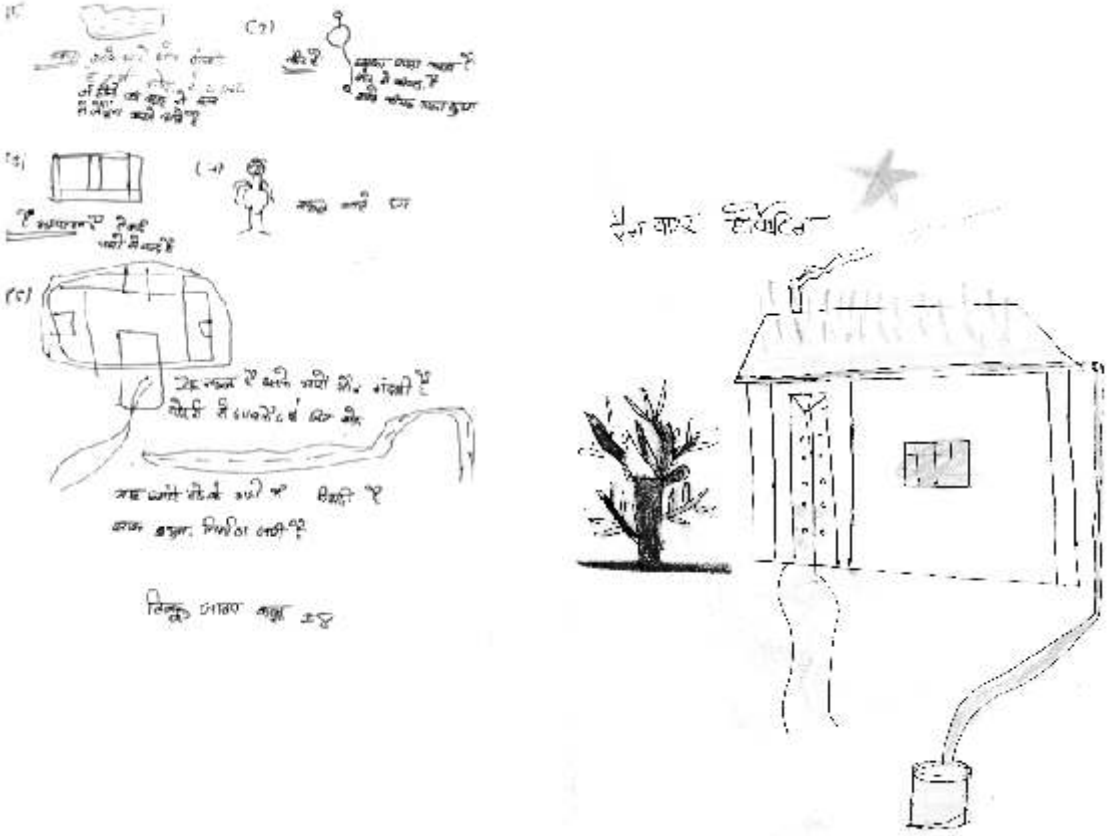

समुदाय के बच्चों के अधिकारों
की जानकारी देना
समुदाय के
साथ बैठक

15

समाहार

मैं आज यहां आई हूं, मुझे आज काम अच्छा लगा क्योंकि आप हमारी आवाज को सुनते एवं समझते हैं।

रश्मि

उम्र 9 साल, जिला छतरपुर

यह सर्वे बच्चों की सशक्त आवाज है जो सभी को मौजूदा वस्तु स्थिति से अवगत करवा रही है कि बड़े-बड़े मुद्दों पर बच्चे क्या सोचते हैं, क्या चाहते हैं। बाल विवाह, यौन हिंसा, बाल श्रम, स्वास्थ्य, पर्यावरण, लिंगभेद, जातिवाद, भेदभाव इत्यादि बड़े-बड़े मुद्दों पर बच्चों ने चर्चा की और अपना पक्ष रखा कि वे क्या सोचते हैं इनके बारे में और क्या चाहते हैं? यूँ तो सरकार ने बहुत सारी महत्वाकांक्षी योजनाएं चलाई हैं और उनमें से कुछ बेहतर चल भी रहीं है परन्तु अभी भी बहुत कमियां बाकी हैं जो इस सर्वे से पता चलती हैं। सर्वे के इस सेम्पल साइज में जब इतना कुछ सामने आ रहा है तो प्रदेश और देश स्तर पर सोचिए कि कितनी कमियां होंगी और कितना काम करने की जरुरत है? बच्चे किसी भी राष्ट्र की अमूल्य निधि माने जाते हैं। यही बच्चे देश का भविष्य भी होते हैं, लेकिन देश के भविष्य को गढ़ने वाले बच्चे कहीं कुपोषण का शिकार हो रहे हैं, तो कहीं फूलों के समान कोमल शरीर को घरों और स्कूलों के अस्वच्छ वातावरण में रहना पड़ता है। फलस्वरूप खेलने, कूदने और पढ़ने की उम्र में इन्हें रोगों से जूझना पड़ता है जो कि बाल मस्तिष्क पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। अशिक्षित परिवारों में बच्चों के प्रति बरती जा रही लापरवाही बच्चों के स्वास्थ्य पर बुरा असर डालती है। स्वास्थ्य, बच्चे के समग्र विकास का सूचक होता है। यह बच्चों की स्कूल में उपस्थिति, नामांकन और पढ़ाई पूरी करने की क्षमता को प्रभावित करता है। बच्चों का अपना स्वभाव, खानपान, शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वास्थ्य का अभाव उसे ऐसे रोगों की और ढकेल देता है जो प्राय: स्कूली जीवन में नहीं होना चाहिए। आज छोटे-छोटे बच्चों में तनाव, अवसाद, नेत्ररोग, कुपोषण, मोटापा आदि रोगों का होना एक गहन चिंता का विषय है।

बच्चों को शारीरिक और मानसिक रूप से सबल व स्वस्थ बनाने की आवश्यकता है। अगर बच्चे स्वस्थ होंगे और उनके स्वभाव के अनुरूप रुचिपूर्ण, गुणवत्ता आधारित शिक्षा उन्हें मिलेगी तो निश्चित ही वह प्रगति के पथ पर अग्रसर होंगे।

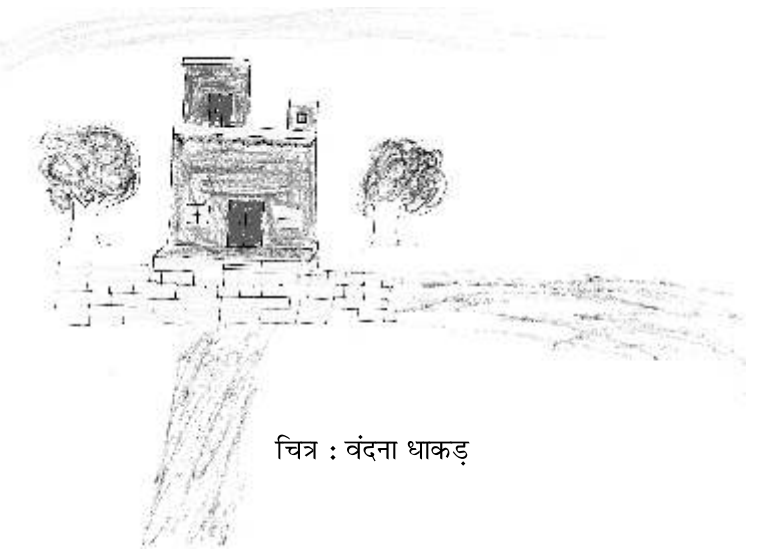

चित्र : वंदना धाकड़

सर्वेक्षण पर बच्चों की प्रतिक्रियाएं

हमें अच्छा लगा। खेल खिलाया गया और अनेक प्रकार की टोपियां बनवाई गईं। ऐसा कार्यक्रम गांव में होते रहना चाहिए जिसमें बच्चों को नई सीख मिले।

रोली, उम्र 12 साल, जिला सतना

हमें बहुत मजा आया। हमें नई—नई जानकारियां मिलीं।

सरस्वती, उम्र 14 साल, जिला सतना

हमें यहां सब—कुछ अच्छा लगा। सर, मैम जो भी यहां आए थे, उन्होंने हमें बहुत अच्छा समझाया और पढ़ाया।

शिवम, उम्र आठ साल, जिला सतना

हमें कहानी सुनने में बहुत मजा आया और हम चाहते हैं कि आप सप्ताह में एक बार आए और हमें कहानी सुनाएं, हमें बहुत अच्छा लगता है। बस हम इसके अलावा नहीं बोलना चाहते हैं। धन्यवाद। हमें सर लोग बहुत अच्छे लगे क्योंकि वह हमें कविता सुनाये इसलिए मैं कृष्णा मार्को धन्यवाद करती हूं।

कृष्णा, उम्र 14 साल, जिला खंडवा

सर्वे में हिस्सा लेने में हमें अच्छा लगा, मैं मैडम बनना चाहती हूं, ये मेरा सपना है।

शिवानी, उम्र 15 साल, जिला खंडवा

हमें स्कूल अच्छा लगता है, हमारी पढ़ाई बहुत अच्छी होती है। आप आए हमें अच्छा लगा, हम भी कोशिश करेंगे आप डबल से आएं हमें उम्मीद है, आप वापस आएंगे।

संजना, उम्र 12 साल, जिला खंडवा

हमें आपका कार्यक्रम बहुत अच्छा लगा और इस कार्य में आपने हमारे साथ अपना कीमती वक्त हमें देने के लिए धन्यवाद। हमें हमारी स्कूल अच्छी लगती है और हमारे साथ स्कूल पढ़ने वाली दोस्त अच्छे लगते हैं।

अनुज, उम्र 16 साल, जिला खंडवा

इसमें हमें कुछ सीखने की बातें बताई गई, और हमें बहुत अच्छा लगा, इसलिए यह हमेशा करवाना चाहिए, क्योंकि इससे बच्चों को बहुत अच्छी सीख मिलती है और मुझे भी बहुत अच्छा लगा।

रजनी, उम्र 15 साल, जिला खंडवा

आपने हमें अच्छी-अच्छी कलाएं बतलाईं अर्थात एक्टिविटी सिखाई जो कि हम बचपन में नहीं किए, इस एक्टिविटी से हमारा मन खिल उठा अर्थात प्रसन्न हो गया। इसलिए आपको लाख-लाख धन्यवाद देता हूं।

राजेश, उम्र 18 साल, जिला खंडवा

परिकल्पना और डिजाइन – अनिल गुलाटी, सचिन कुमार जैन, राकेश कुमार मालवीय

फील्ड सहयोग – विजय कुमार यादव, सुरेश कुमार, संजय कुमार, आरती खड़िया, सुगंधी विश्वकर्मा, चेतन कोचले, रमेश गोहारे, रामविशाल गौड़, उमाशंकर सैनी, लीला अहिरवार, मेहरून सिद्दकी, आनंद, सरोज रायकवार, उषा, अजय यादव, सुनील दत्ता शर्मा, विरेंद्र गौतम, अंतर सिंह आदिवासी, ललित मालवीय, हरीश साहू, दीपक कुल्हारिया, मनोज गुप्ता, अंजली आचार्य, मोहसिन, कोकिला, कृष्णा अन्य साथी और टीम विकास संवाद

विशेष सहयोग – शुभेन्दु भट्टाचार्य, जया सिंह, सम्पत माण्डवे, निलेश देसाई, सीमा प्रकाश, विमल जाट, युसूफ बेग, रामनरेश, सिया दुलारी, संतोष द्विवेदी, प्रतीक कुमार, चिन्मय मिश्र, राकेश दीवान

डेटा एनालिसिस – अरविंद मिश्र, डेटा फीडिंग–खुशबू तोमर,

प्रशिक्षण और समन्वय – कार्तिक शर्मा, राकेश कुमार मालवीय

रिपोर्ट डिजाइन – अमित सक्सेना

चित्र : रबीना जाटव

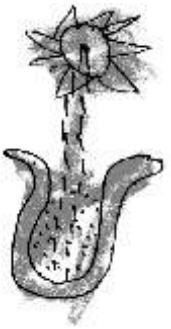

भागीदार संस्थाएं

- सिनर्जी संस्थान, हरदा
- संपर्क, झाबुआ
- अंश हैप्पीथनेस सोसायटी, भोपाल
- रेवांचल दलित आदिवासी समाजसेवा संस्था, डभौरा
- आदिवासी अधिकार मंच, सतना
- आधार, खजुराहो
- पृथ्वी टस्ट, पन्ना
- बदलाव संस्था, शिवपुरी
- जेनिथ यूथ फाउंडेशन, उमरिया
- स्पंदन, खंडवा

सहयोगी संस्थाएं

- मध्यप्रदेश लोक सहभागी साझा मंच
- हिफाज़त
- चाइल्ड राइट्स ऑबजर्वेटरी (सीआरओ)

समन्वय

- विकास संवाद, मध्यप्रदेश

विशेष सहयोग

- यूनिसेफ मध्यप्रदेश
- चाइल्ड राइट्स एण्ड यू
- टीडीएच–बीएमजेड (जर्मनी)

नोट : रिपोर्ट में छाया चित्रों का उपयोग बच्चों की सहमति से किया गया है।

बच्चों की आवाज

थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे

थोड़े से बच्चों के लिए
एक बगीचा है
उनके पाँव दूब पर दौड़े रहे हैं
असंख्य बच्चों के लिए
कीचड़-धूल और गंदगी से पटी
गलियाँ हैं जिनमें वे
अपना भविष्य बीन रहे हैं।

एक मेज है
सिर्फ छह बच्चों के लिए
और उनके सामने
उतने ही अंडे और सेव हैं
एक कटोरदान है सौ बच्चों के लिए
और हजारों बच्चे
एक हाथ में रखी आधी रोटी को
दूसरे से तोड़ रहे हैं ।
ढेर सारे बच्चे होटलों में
कप-बसियाँ रगड़ रहे हैं
उनके चेहरे मेमनों की तरह दयनीय हैं
और उनके हाथों और पाँवों की चमड़ी
हाथ और पाँव का साथ छोड़ रही है।

– चंद्रकांत देवताले की कविता

VIKAS SAMVAD